



सूर्या फाउण्डेशन राष्ट्राय स्वाहा

इदं राष्ट्राय इदं न मम

त्रैमासिक पत्रिका

अंक-4

वर्ष-2

अक्टूबर - दिसंबर 2024

चरन्मार्गान्विजानाति ...





अनुक्रुति

चेयरमैन संदेश-प्रेरणा	1
सम्पादकीय	2
एडवांस ट्रेनिंग कैम्प	3
आदर्श गाँव योजना	8
कृषि एवं गौ-पालन	16
इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन (INO) गतिविधियाँ	22
सूर्या थिंक टैंक	30
स्कूल भारती ऑर्गेनाइजेशन (SBO)	42
पीएम श्री सूर्या एकलव्य सैनिक स्कूल, खेरंचा	44
कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर, मध्य प्रदेश	48

प्रेरणा



जयप्रकाश अग्रवाल

राष्ट्रपति द्वारा पद्म श्री से सम्मानित
चेयरमैन, सूर्या फाउण्डेशन

साथियों,

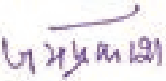
सूर्या फाउण्डेशन की स्थापना के पीछे वर्षों के चिंतन, मनन और सामाजिक मंथन का आधार था। समाज जीवन में अपना जीवन होम करने वाले अनेक महानुभाव, विशेषज्ञों का अनुभव था, जिसके आधार पर सूर्या साधना स्थली, झिंझौली ट्रेनिंग का मॉडल तैयार किया गया। अनेक महापुरुषों के जीवन की प्रेरणा और भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के सपने को लेकर हमने सूर्या फाउण्डेशन के अनेक आयाम आरम्भ किए।

थिंक टैंक, प्राकृतिक चिकित्सा, बालकों के लिए व्यक्तित्व विकास शिविर, आदर्श गाँव योजना, बालकों के बस्ते का बोझ कम करने के उद्देश्य से सूर्य भारती किताबों की रचना - धीरे-धीरे आयाम बढ़ते गए, परिवार बढ़ता गया और बढ़ता गया हमारे काम का दायरा।

आदर्श गाँव योजना के माध्यम से देश के उन स्थानों पर काम प्रारंभ हुआ, जहाँ पहुँचना भी दूभर था। ये सब ऐसे कदम थे जो कहीं ना कहीं समाज जीवन को प्रभावित कर रहे थे। काम बढ़ रहा है और साथ-साथ बढ़ रही है जिम्मेदारी। अब अगर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन, गाँव-मोहल्ले या समाज में किसी भी परिवर्तन की बात बताता है तो मन उत्साह से और भर उठता है कि हम और अधिक मेहनत के साथ काम करेंगे। यह सब हमारे सैकड़ों कर्मठ कार्यकर्ताओं के बिना संभव नहीं था। नए टारगेट लेकर उन्हें पूरा करना और फिर आगे बढ़ जाना।

हम यही चाहते हैं कि जो लोग पीछे छूट गये हैं उन्हें बराबरी के अवसर मिले।

दीनदयाल जी के “अन्त्योदय” के सिद्धांत को सामने रखकर हमने अपने प्रकल्पों की रचना और योजना की है। भारत का कोई भी वर्ग जो किसी भी प्रकार से पीछे है, उन्हें आगे लाना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। हम सबको इस प्रयास में भागीदार बनना होगा। अगर हम एक जीवन भी बदल सकें तो हम सार्थकता की ओर बढ़ चलेंगे।


जयप्रकाश

सम्पादकीय



महाराष्ट्र के नंदुरबार की बहन तनुश्री यह कहती है कि सूर्या फाउंडेशन के एक व्यक्तित्व विकास शिविर ने उसके पूरे जीवन की दिशा बदल दी। मेरठ के किसी गाँव में स्वयं सहायता समूह चलने वाली कोई महिला लखपति दीदी बनती है।

पीएम श्री विद्यालय में पढ़ने वाला कोई वनवासी बालक कहता है कि विद्यालय के कारण ही उसकी सोच में यह बदलाव आया है, वह सैनिक बनकर अब अपना जीवन इस देश की सेवा में लगाना चाहता है। तब लगता है कि पिछले 30 वर्षों से सूर्या फाउंडेशन ने जिस दिशा में लगन और मेहनत के साथ काम किया है उसका सार्थक प्रतिफल सामने आने लगा है।

पिछले महीने में प्रकृति चिकित्सा की जागरूकता को लेकर एक राष्ट्रीय महाअधिवेशन का आयोजन हुआ। देश भर से 3000 से अधिक प्राकृतिक चिकित्सक तालकटोरा स्टेडियम में एकत्र हुए और सभी ने संकल्प लिया कि हम इस देश की स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाकर ही दम लेंगे। प्राचीन भारत में प्रचलित पद्धतियों को एक बार पुनः समाज में स्थापित करना हम सब की जिम्मेदारी है।

नई शिक्षा नीति के लिए महीने भर चलने वाली गतिविधियाँ न केवल School Bharti Organisation से जुड़े आचार्यों को प्रभावित कर रही है बल्कि बालकों और अभिभावकों तक

भी नई शिक्षा नीति के प्रभाव को पहुँचा रही है। सोचिए! कितना सुंदर दृश्य रहा होगा जब पूरे देश भर से युवा एकत्रित होकर नागपुर होते हुए जगन्नाथपुरी पहुँचे। ऊर्जा से लबरेज ये युवा आने वाले भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। इस पूरी की पूरी यात्रा की जिम्मेदारी ये नवयुवक स्वयं उठा रहे थे। उन लोगों से बातचीत कर प्रेरणा ले रहे थे, जिन्होंने समाज में उदाहरण प्रस्तुत किए। भारत का सांस्कृतिक, पारंपरिक वैभव देखकर घर लौटे तो अपने मन में देश के लिए समाज के लिए परिवार के लिए बहुत कुछ करने का संकल्प लेकर लौटे।

भारत सदैव एक कृषि प्रधान देश रहा है, खेती में नए-नए प्रयोग अब फसलों की पैदावार और गुणवत्ता दोनों बढ़ा रहे हैं। सूर्या फाउंडेशन देश भर में गौ आधारित कृषि और गौपालन के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर रहा है। किसान चैनल के माध्यम से देश भर के बेहतरीन सफल उदाहरण सामने लाए जा रहे हैं।

थिंक टैंक के माध्यम से नए विषयों को नए विचारों और सुझावों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। देश काल वातावरण के अनुसार समाधान सामने रखे जाते हैं।

अलग-अलग देखें तो ये प्रयास छोटे जरूर दिखते हैं लेकिन समय के रूप से आने वाले कल में बड़ा बदलाव लेकर आने वाले हैं।

राहुल 'नील'

हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला ऐ...



एडवांस ट्रेनिंग कैम्प

सूर्या फाउण्डेशन के युवा प्रशिक्षकों के लिए आयोजित होने वाला एडवांस ट्रेनिंग कैम्प इस वर्ष भारत के भौगोलिक केंद्र बिंदु ऐतिहासिक नगरी नागपुर में आयोजित हुआ। 24 दिसंबर 2024 को शुरू हुए इस शिविर में देशभर के 11 राज्यों के 70 भैया-बहन सामाजिक संस्था भारतीय उत्कर्ष मंडल, नागपुर के परिसर में पहुँचे। यहीं पर BAPS के संतों स्वामी मंगलश्लोक दास जी और स्वामी प्रयागमुनि दास जी तथा राष्ट्रीय शैक्षिक संघ के महामंत्री डॉ. सतीश लोकपाल राव चापले जी के आशीर्वाद के साथ शिविर प्रारम्भ हुआ।

नागपुर में यात्रा शिविर के दौरान डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन से जुड़े पंचतीर्थों में से एक 'दीक्षाभूमि' के भ्रमण के साथ आरम्भ हुई। देश को अनेकों सैनिक और सैन्य नेतृत्वकर्ता प्रदान करने वाले भोंसला मिलिट्री स्कूल की यात्रा ने युवाओं को राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत कर दिया। छात्रों को सैनिक प्रशिक्षण देने वाले देश के प्रमुख आवासीय विद्यालयों में भोंसला मिलिट्री स्कूल का विशिष्ट स्थान है।

जाति और सम्प्रदायों में बंटे भारत को एकरूप में पिरोने के लिए जीवनपर्यंत कार्यरत रहनेवाले प.पू. डॉ. हेडगेवार और प.पू. गोलवलकर गुरु जी के स्मृति मंदिर का दर्शन शिविरार्थियों ने किया।



इसके पश्चात् विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुख्यालय महाल कार्यालय में जाकर संघ के कार्यों के बारे में जानकारी ली। निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र-निर्माण के कार्य में अपने आपको समर्पित करनेवाली अनेक पीढ़ियों का निर्माण संघ ने किया है। निश्चित ही पहले संघ स्थान मोहिते बाड़ा का दर्शन सभी शिविरार्थियों के लिए प्रेरणादायी था। शाम होते-होते स्वामी नारायण मंदिर के दर्शनों का लाभ युवाओं को मिला। नागपुर के इस शिक्षाप्रद यात्रा शिविर के बाद कारवां बढ़ चला अरुणोदय के प्रदेश उड़ीसा की ओर। भगवान जगन्नाथ की पावन धरती उड़ीसा में 12 जोड़ी पहियों और 7 घोड़ों के रथ के रूप में भारत की समृद्ध स्थापत्य कला का साक्षात्कार देने वाले कोणार्क सूर्य मंदिर के दर्शनों से यह यात्रा आरम्भ हुई। यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में इसे संग्रहीत किया गया है। 13वीं शताब्दी में पूर्वी गंग वंश के राजा नरसिंहदेव द्वारा निर्मित यह मंदिर कलिंग वास्तुकला का श्रेष्ठ उदाहरण है। मंदिर की दीवारों और छतों पर सुंदर और सुगढ़ शिल्पकला देखने को मिलती है, इसमें देवी-देवताओं, नर्तकों और संगीतकारों की मूर्तियाँ अलंकृत हैं।

सूर्य मंदिर दर्शन के बाद रात में ही पवित्र चार धामों में से एक भगवान जगन्नाथ जी मंदिर के दर्शन किये। श्री जगन्नाथ मंदिर मात्र एक मंदिर नहीं है बल्कि आस्था, संस्कृति और एकता का प्रतीक है। काठ की बनी मूर्तियों के रूप में भगवान श्रीकृष्ण अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ यहाँ विराजमान हैं। हर साल होने वाली रथ यात्रा इस मंदिर की बड़ी विशेषता है। देशभर के लाखों श्रद्धालु इसमें भाग लेने के लिए जगन्नाथपुरी पहुँचते हैं।

अगले दिन का सवेरा सभी शिविरार्थियों के लिए एक यादगार बन गया। सुबह भोर से पहले ही सभी समुद्र किनारे पहुँच गए, समुद्री लहरों की तीव्र कलरव आवाज के बीच युवाओं ने ध्यान लगाया। इधर सब योग मुद्रा में ध्यानमग्न थे और उधर सूर्य देव समुद्र की ओट से प्रकट हो रहे थे, सूर्य की कांति बिखेरती किरणों के बीच युवाओं ने ध्यान समाप्त किया और फिर कूद पड़े समुद्र की लहरों में अटखेलिया करने। लहरें और तरुणाई आपस में खूब मस्ती कर रही थी। ये पल युवाओं के लिए यादगार बन गए।

सुबह के इन आनंदायक पलों की समाप्ति के बाद एक और अविस्मरणीय याद उनके जीवन में जुड़ने वाली थी। क्योंकि हम पहुँच चुके थे भारत की कला



राजधानी एक छोटे से गाँव रघुराजपुर, एक ऐसा गाँव जहाँ का हर घर कलाकार का घर है। यह गाँव पट्टचित्रों के लिए विश्वप्रसिद्ध है। ये चित्र पारंपरिक तरीकों से बनाए जाते हैं और इनमें हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्य होते हैं। गाँव का हर घर कला से जुड़ा हुआ है। यहाँ आप हर घर की दीवारों पर खूबसूरत चित्रकारी देख सकते हैं। पट्टचित्रों के अलावा, यहाँ आप काष्ठ कला, तालपत्र चित्रकारी, पत्थर की नक्काशी और गोबर के खिलौने भी देख सकते हैं। गोट्टिपुआ नृत्य, जो ओडिशी नृत्य का पूर्वज नृत्य माना जाता है, का जन्म इसी गाँव में हुआ था। गाँव के युवा जब सांस्कृतिक नृत्य करते हैं तो देखने वाले दांतों तले उँगलियाँ दबा लेते हैं। गाँव के कलाकारों को मिले तीन-तीन पद्म पुरुस्कार स्वयं इस गाँव की कलागाथा कहते हैं।

भारत के इस समृद्ध कला केंद्र की रचनात्मकता से भावविभोर सभी युवा भैया बहनों के लिए एक और अद्भुत आश्चर्य प्रतीक्षा कर रहा था।

डॉ. अच्युत सामंत के संघर्ष और दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप विशालता की पराकाष्ठा प्राप्त करने वाला कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज दुनिया का सबसे बड़ा शिक्षण संस्थान है। एक किराये के घर में मात्र 125 आदिवासी छात्रों से शुरू हुए इस संस्थान में अब केजी से पीजी तक अध्ययन करने वाले 30 हजार आदिवासी छात्र हैं। यहाँ सभी को मुफ्त आवास, मुफ्त भोजन और मुफ्त शिक्षा मिलती है। शिक्षा के साथ खेलकूद, कला और संस्कृति तथा रोजगारपरक कौशल यहाँ सिखाये जाते हैं, जिससे हर विद्यार्थी शिक्षा पूर्ण कर अपने साथ कौशल लेकर आत्मनिर्भर बन कर निकलता है। डॉ. अच्युत सामंत का मानना है कि प्रत्येक आदिवासी युवा को अपनी जड़ों से जुड़ा रहकर भी बाकि दुनिया के समकक्ष ही खुद को बनाना चाहिए।

एक बड़े कस्बे जितनी आबादी के बराबर संख्या में छात्रों के लिए प्रतिदिन आवास, भोजन, स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि व्यवस्था और अनुशासन बनाये रखना अपने आप में मैनेजमेंट की किसी भी डिग्री से बड़ा व्यवहारिक



ज्ञान है। हमारे युवाओं को यहाँ से जीवन में कैरियर और समाज के लिए कुछ बहुत अच्छा करने की प्रेरणा मिली।

दिन की समाप्ति के बाद रात्रि विश्राम के लिए उत्कल बिपन्ना सहायता समिति के हॉस्टल में रुके। प्राकृतिक आपदाओं व अन्य प्रकार से पीड़ित लोगों के बचाव, राहत और पुनर्वास में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए इस संस्था को जाना जाता है।

अगले दिन सुबह यात्रा बढ़कर पहुँची नंदन कानन। यह सिर्फ एक चिड़ियाघर नहीं, बल्कि एक प्राकृतिक आवास है जहाँ विभिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं को उनके प्राकृतिक वातावरण के समान परिस्थितियों में रखा गया है। यह लगभग 437 हेक्टेयर में फैला हुआ है, जो इसे भारत के सबसे बड़े चिड़ियाघरों में से एक बनाता है। यहाँ स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप और उभयचर सहित विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु पाए जाते हैं। नंदन कानन अपने सफेद बाघों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ जानवरों को प्राकृतिक वातावरण में रखा गया है, जिससे वे अपने प्राकृतिक व्यवहार को प्रदर्शित कर सकते हैं। चिड़ियाघर के भीतर एक सुंदर वनस्पति उद्यान भी है, जहाँ विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे हैं। यह कई लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के लिए काम करता है।

अब यह प्रेरक यात्रा अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ रही थी, आज से लगभग 1850 साल पहले राजा खारवेल के शासनकाल में पहाड़ों को काटकर अनेकों गुफाओं का निर्माण किया गया, जिन्हें उदयगिरि और खंडगिरि के नाम से जाना जाता है। गुफाओं की दीवारों पर

जैन तीर्थकरों और अन्य धार्मिक प्रतीकों की उत्कृष्ट नक्काशी उस समय की विकसित वास्तुकला का दर्शन है। जैन धर्म के इतिहास को समझने के लिए ये गुफाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

शांति के प्रतीक जैन तीर्थकरों के जीवन से जुड़ी शिक्षाएँ ग्रहण करने के उपरांत इस यात्रा का समापन हुआ।

अब समय था अपने अपने गंतव्य स्थलों को लौटने का। लगभग 11 राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले इन 70 युवाओं ने एक साथ यात्रा करके अनेकों सीख तो अर्जित की ही साथ ही इन 5 दिनों में जहाँ भी रहे वहीं 'युवा भारत' की छाप छोड़ते चले। अब ये सब युवा भारत के प्रतिनिधि हैं, जहाँ भी जायेंगे युवा भारत के 5 मानबिन्दुओं संस्कार, शिक्षा, शक्ति, सेवा और सजगता का प्रसार करेंगे।

इस यात्रा शिविर के दौरान सभी युवाओं को सूर्या फाउण्डेशन के चेयरमैन आदरणीय जयप्रकाश जी, सीनियर वाइस चेयरमैन ब्रिगेडियर डी.सी. पंत जी और वाइस चेयरमैन वेद जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। नागपुर और उड़ीसा दर्शन तो युवाओं ने किये ही साथ ही अपने गंतव्य स्थल से शिविर स्थल तक आने जाने में भी कई राज्यों के दर्शन किये। दिल्ली से उड़ीसा तक की यात्रा करने वाले युवाओं ने 5 राज्यों के साथ ही समस्त ऋतुओं को भी एक ही समय में देखा। ये ऋतुओं, भाषा और भोजन की विविधता ही भारत की अनेकता में एकता को दर्शाता है।

सूर्या फाउण्डेशन इन सभी युवाओं को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता है।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

उठो, जागो, और ध्येय की प्राप्ति तक रूको मत।

युवा अनुभव...

Unforgettable Experience in Jagannath Puri. I learned valuable lessons, made beautiful memories, and felt inner peace.

LESSONS LEARNED

1. **Spirituality** : I connected with my spiritual side and learned to appreciate faith and devotion.
2. **Inner Peace** : I found peace and calm through meditation and sunrise reflection.
3. **Human Connection** : I made lifelong friends and learned the importance of community.

BEAUTIFUL MEMORIES

1. **Peaceful Sunrise** : Watching the sunrise over the ocean was breathtaking.
2. **Train Experience** : It was the amazing experience.. chanting Bhajan all of us together and creating a positive vibes is something special
3. **Cultural Immersion** : Exploring Puri's vibrant streets & trying local cuisine was amazing.

GRATITUDE

Honorable J P Sir,

Not only me but also my entire family is grateful for your vision and efforts of nation building. Your video touches our heart so beautifully. My papa especially missed you every time we talk and tell us about the lesson he learned from you This trip reminded me to appreciate life's journey and connections.

Special thanks for Respected Ved Sir who entered the middle of the yatra. Each and

every time we are learning something new in the trip, it may be about being trainer, management, or safety precautions!!

The whole trip management was so good as to being a management student it inspires me alot..how to handle the whole group and enjoy alot !!

Really thankful for such a caring behaviour of Bharat bhैया, Dharmendra bhैया and Himanshu bhैया.

Salute to Surya Management.

-Tanushri Girish Badgujar
Nandurbar, Maharashtra
Std. 12th ATC 2024

Heartiest thanks to

Padma Shri J.P. Sir,

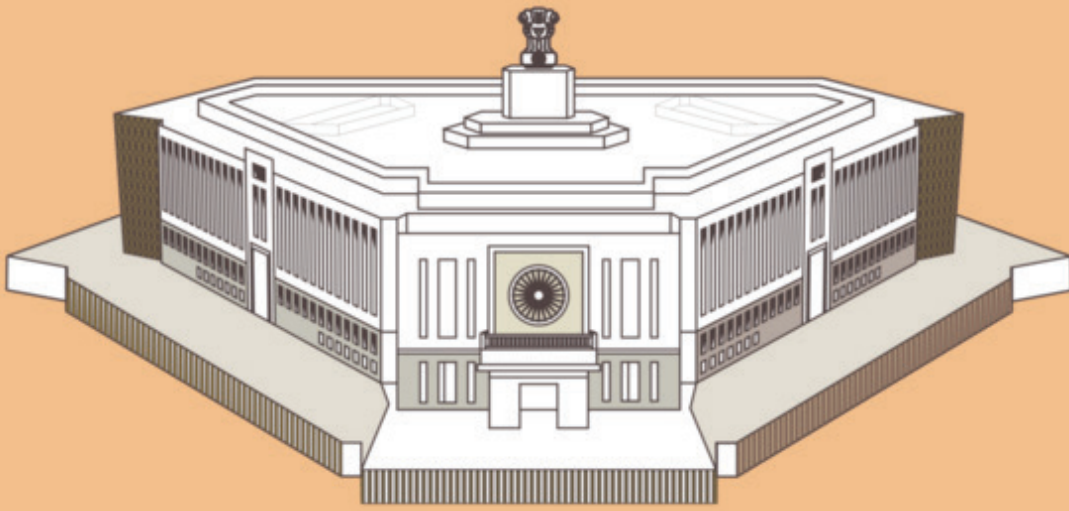
Surya Foundation and all its family members for organising the Advanced Training Camp tour to Nagpur and Odisha, which provided us with the opportunity to visit numerous historical and cultural places, learn invaluable lessons about life and responsibilities.

This journey taught us the importance of respecting our history, culture, traditions and highlighted the responsibility we bear to preserve and pass them on to future generations.

I deeply appreciate this enriching experience, which not only enhanced my knowledge but also guided me towards becoming a more responsible and conscious individual.

Thank you for this incredible opportunity!

Anurag Mishra
ATC-2024 (Bahraich, U.P.)



ग्रामोत्थान से राष्ट्रोत्थान

आदर्श गाँव योजना

सूर्या फाउण्डेशन अपनी आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत एक समेकित विकास के लिए प्रयत्नशील है। हमारा लक्ष्य है कि विभिन्न योजनाओं के माध्यम से हम गाँव को इस रूप में सशक्त कर सकें कि हर गाँव राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। देश भर में अनेकानेक प्रयोग निम्न दिशा में काम कर रहे हैं। हमारा प्रयास है—

- गाँव में जिम्मेदार और कुशल नेतृत्व का विकास।
- ग्रामीण लोगों के मानसिक दृष्टिकोण में परिवर्तन।
- आत्मनिर्भरता और प्रगति।
- ग्रामीण समुदाय के स्वास्थ्य की रक्षा करना।
- ग्रामीण उद्योगों के कृषि और विकास का आधुनिकीकरण।
- ग्रामीण महिलाओं और परिवारों की दशा में सुधार।
- राष्ट्र के भविष्य के नागरिकों के रूप में युवाओं के उपयुक्त व्यक्तित्व का विकास।

उपरोक्त बिन्दुओं को आधार बनाकर ही कार्यक्रम की रचना एवं आयोजन चल रहे हैं—

सूर्या फाउण्डेशन के चेयरमैन पद्मश्री जयप्रकाश अग्रवाल जी के जन्मदिन के अवसर पर गौड़गांव, बीदर (कर्नाटक) में निःशुल्क पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना द्वारा किया गया। जिसमें 150 पशुओं का उपचार किया गया। शिविर में पशुओं को निःशुल्क इलाज, दवाइयाँ, स्वास्थ्यवर्द्धक पाउडर आदि प्रदान किया गया। यह प्रयास पशुओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और ग्रामीण क्षेत्रों में पशु कल्याण को बढ़ावा देने की दिशा में किया गया। इस शिविर में एटीएन बायोफार्म के चिकित्सकों ने सहयोग किया।



ग्रामीण खेल महोत्सव का शुभारम्भ

सूर्या फाउण्डेशन की आदर्श गाँव योजना के अन्तर्गत इस वर्ष सूर्या ग्रामीण खेल महोत्सव 2024 का आयोजन 14 राज्यों के 150 गाँवों में किया गया। यह महोत्सव गाँवों के युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अद्भुत मंच प्रदान करता है। खेलों के माध्यम से न केवल युवाओं में शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देता है बल्कि आपसी भाईचारा, एकता एवं टीम भावना को बढ़ाता। ग्रामीण खेल महोत्सव का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में खेले जाने वाले पारम्परिक खेलों को बढ़ावा देना, सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करना और ग्रामीण प्रतिभाओं को उभारने का एक मंच प्रदान करना है। संस्था ग्रामीण क्षेत्रों के पारम्परिक खेलों को पुनर्जीवित और संरक्षित करने का प्रयास कर रही है, ताकि ये खेल आधुनिकता में खो न जाएं और आने वाली पीढ़ियों को इनसे जोड़ सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं में छिपी हुई खेल प्रतिभाओं को सामने लाने हेतु महत्वपूर्ण मंच प्रदान करना है, जहाँ खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर बड़े स्तर पर पहचान बनाते हैं।



स्वयं सहायता समूहों की उत्पाद प्रदर्शनी

आयुष मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से सूर्या फाउण्डेशन इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गनाइजेशन (INO) ने प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन तालकटोरा इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों का स्टॉल लगाए गए। देशभर से आए अतिथियों ने सूर्या फाउण्डेशन के पुनीत कार्य की प्रशंसा की और महिलाओं द्वारा तैयार उत्पादों को खरीदकर अपनी भागीदारी निभाई।



इसी प्रकार हिन्दूपुर (आन्ध्र प्रदेश) के गुडडमल्ली गाँव की महिला स्वयं सहायता समूह की बहनों द्वारा सूर्या रोशनी लिमिटेड में स्टॉल लगाकर विभिन्न प्रकार के खाद्य सामग्री चिप्स, रागी पापड़, लड्डू, चिक्की, हस्तनिर्मित मालाएँ आदि बेचीं। इसमें महिलाओं को काफी मुनाफा हुआ और प्लांट के अधिकारियों द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

ग्राम सर्वा, मालनपुर, भिण्ड (म.प्र.) में बीज वितरण कार्यक्रम के अवसर पर महिला स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा तैयार उत्पादों का स्टॉल लगाया गया। भिण्ड जिला कलेक्टर श्रीमान संजीव श्रीवास्तव जी ने महिलाओं द्वारा तैयार उत्पाद निरीक्षण व खरीदारी भी की और महिलाओं के इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सुझाव दिया। भिण्ड जिला कलेक्टर के साथ श्री मुकुल चतुर्वेदी जी (उप-महाप्रबंधक, सूर्या रोशनी लिमिटेड, मालनपुर) श्री गौतम जी व श्री संजय वशिष्ठ जी (जैविक कृषि विशेषज्ञ सूर्या फाउण्डेशन) मौजूद रहे साथ ही जिले के सरकारी अधिकारियों एवं ग्रामीणों ने स्टॉल का विजिट किया एवं खरीदारी की। साथ ही सूर्या रोशनी लिमिटेड प्लांट, मालनपुर में महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा तैयार उत्पादों का स्टॉल लगाया गया।



हमें गर्व है...

आसमान की ओर

मेरा नाम पुष्पा है। नयागांव हरियाणा के रहने वाली हूँ। पारस स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष हूँ। पिछले एक वर्ष से गाँव में ही जनरल स्टोर चलाती हूँ। सूर्या फाउण्डेशन द्वारा आयोजित महिला स्वावलंबन शिविर में प्रशिक्षण लेने हेतु मेरा भी चयन किया गया, पाँच दिन के प्रशिक्षण में मैंने धूपबत्ती, सम्ब्रानी कप, दीपक, उपला, साबुन, वाशिंग पाउडर, डिशवाश, हैण्डवाश, टॉयलेट क्लीनर आदि बनाना सीखा, प्रशिक्षण के बाद मैंने गाँव आकर अपने समूह की सभी सदस्यों के साथ प्रशिक्षण में सीखी सभी वस्तुओं के बारे में बताया तथा घरेलू उत्पाद जिसमें वाशिंग पाउडर, डिशवाश, हैण्डवाश, टॉयलेट क्लीनर, लिक्विड डिटर्जेंट तथा नहाने का साबुन बनाने का काम शुरू करने हेतु सहमती बनाई और समूह से ही पैसा संग्रह कर इस वस्तुओं को बनाने हेतु कच्चा मटेरियल दिल्ली से लेकर आये और उत्पादों को बनाने का काम शुरू किया। इस कार्य से जुड़ने के बाद हमारा आत्मविश्वास बढ़ा है तथा हमें पूर्ण विश्वास है कि इस कार्य को आगे बढ़ाकर हम अपने गाँव में रोजगार के क्षेत्र में एक आदर्श स्थापित करेंगे।

स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ बनी लखपति दीदी

तन्मय ट्रस्ट एवं सूर्या फाउण्डेशन के संयुक्त प्रयासों से गाँव फफूण्डा, मेरठ (उ.प्र.) की तीन महिलाएँ लखपति दीदी बन गई हैं। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए मेरठ के फफूण्डा व अतराड़ा गाँव में अनोखी पहल शुरू की है। इस पहल के तहत महिलाओं के 10 स्वयं सहायता समूहों का गठन कर विभिन्न उत्पादों के निर्माण के लिए प्रशिक्षण दिया गया। फफूण्डा गाँव के ही कर्नाटक कैडर के सेवानिवृत्त आई.ए.एस. सचिव भारत सरकार श्री ब्रह्मदत्त शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती शैलजा दत्त स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के बने उत्पादों के बारे में समय-समय पर उत्पाद निर्माण का प्रशिक्षण एवं मार्केटिंग पैकेजिंग का प्रशिक्षण उपलब्ध कराती है। साथ ही महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में ग्रामीण महिलाओं को मदद कर रही है। श्रीमती दत्त द्वारा प्रदान की जा रही सहायता से महिलाएँ न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधार रही हैं, बल्कि वे अपने गाँव के साथ अन्य गाँवों व मेरठ में एक मिसाल बन रही हैं।



महिला स्वावलंबन शिविर

ग्राम विकास के लिए संकल्पित सूर्या फाउण्डेशन-आदर्श गाँव योजना द्वारा देश भर में किया जाने वाला महिला सशक्तिकरण एक ऐसा कार्य है जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और समाज में उनकी भूमिका को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विशेष रूप से महिला उद्यमिता ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाएँ अपने व्यवसाय को शुरू करने और चलाने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करने हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और उन्हें अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक चलाने में मदद करना है।

इस वर्ष सूर्या साधना स्थली झिंझौली दिल्ली में आयोजित पाँच दिवसीय महिला स्वावलंबन प्रशिक्षण शिविर में देशभर के 7 राज्यों से 75 महिलाओं ने प्रशिक्षण में हिस्सा लिया। जिसमें उन्हें अनुभवी वक्ताओं द्वारा बौद्धिक प्रशिक्षण व उद्यमिता संवाद, गौ उत्पाद में धूपबत्ती, संब्रानी कप, दंत मंजन, दीपक, उपले, मुल्तानी साबुन आदि, क्लीनिंग उत्पाद में वाशिंग पाउडर, हैण्डवाश, डिशवाश, टायलेट क्लीनर आदि, आँवला उत्पाद में मुरब्बा, कैंडी, अचार आदि



बनाने का प्रशिक्षण दिया गया, निफ्टम यूनिवर्सिटी द्वारा नान खटाई, टमाटर सॉस, खोया, अचार आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

महिला स्वावलंबन शिविर में सम्मिलित माताओं और बहनों को एक खास अवसर प्राप्त हुआ। उन्हें विश्व व्यापार मेला भारत मण्डपम दिल्ली में भ्रमण कराया गया, जहाँ उन्होंने विभिन्न उत्पादों और उद्योगों की प्रदर्शनी देखी। यह भ्रमण न केवल उनके ज्ञानवर्धन का कारण बना, बल्कि स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम था। हम आशा करते हैं कि इस अनुभव से हर महिला को प्रेरणा मिली होगी और वह अपने व्यवसायिक और सामाजिक जीवन में नई ऊँचाईयों तक पहुँच सकेंगी।



वनवासी बहनों द्वारा सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना द्वारा संचालित प्रकल्पों का भ्रमण

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा वनवासी बहनों के लिए कन्या शिक्षा परिसर का संचालन मध्य प्रदेश के सीहोर जिले में किया जा रहा है। यह परिसर मुख्य रूप से वनवासी और पिछड़े क्षेत्रों की बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के अवसर प्रदान करने के लिए समर्पित है। परिसर में छात्राओं को न केवल शैक्षणिक ज्ञान दिया जाता है, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक शिक्षा, संस्कार, योग, और व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दिया

जाता है। संस्थान का उद्देश्य है कि ग्रामीण बालिकाएँ समाज की मुख्यधारा में शामिल होकर एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें। यह प्रयास शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में एक प्रेरणा का स्रोत है।

कन्या शिक्षा परिसर की बहनों को भारत भ्रमण के दौरान मध्य प्रदेश के भिण्ड जिले में सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना द्वारा संचालित सूर्या सिलाई केंद्र तथा सूर्या कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेंटर का भ्रमण करवाया गया।

कार्यकर्ता दक्षता वर्ग

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा सूर्या साधना स्थली झिंझौली दिल्ली में प्रत्येक तीन माह में कार्यकर्ता दक्षता वर्ग का आयोजन किया जाता है जिसमें आदर्श गाँव योजना के सभी पूर्णकालिक कार्यकर्ता हिस्सा लेते हैं। इस वर्ग में पिछले तीन माह में किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आने वाले तीन माह में किये जाने वाले कार्यों की प्लानिंग की जाती है। इसी क्रम में 15 से 19 अक्टूबर को झिंझौली में वर्ग लगाया गया। इस वर्ग में विशेष कर कैरियर काउंसलिंग श्रीमती दीप जजमान जी द्वारा एक नया विषय जोड़ा गया और सभी कार्यकर्ताओं को उसकी जानकारी दी गयी। श्रीमान दीनानाथ ठाकुर जी (राष्ट्रीय अध्यक्ष सहकार भारती) द्वारा बहुत ही प्रभावी तरीके से सत्र लिया गया। वर्ग के अंतिम दिन आदरणीय जयप्रकाश जी का सभी कार्यकर्ताओं से मिलना हुआ।





ट्राई साईकिल व बैसाखी वितरण

सेवा पखवाड़ा के अन्तर्गत काशी (उत्तर प्रदेश), काशीपुर (उत्तराखण्ड) में गाँव के ऐसे व्यक्ति जो शारीरिक रूप से असहाय थे। ऐसे 07 व्यक्तियों को बैसाखी एवं ट्राई साईकिल वितरण किया गया। गाँव के इन दिव्यांगजनों को अभी तक किसी प्रकार की सरकारी मदद नहीं मिली थी।



ग्राम गौरव मेला

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श योजना के अन्तर्गत शारदीय नवरात्रि में 10 दिन चलने वाले ग्राम गौरव मेला का आयोजन किया जाता है। जिसमें गाँव के हर वर्ग के लोग बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। ग्रामवासी अपनी सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और विभिन्न गतिविधियों का उत्सव मनाते हैं। इसमें ग्रामीण विकास, शिक्षा, कला, और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के लिए आयोजित किया जाता है। मेले का उद्देश्य गाँव के लोगों के बीच आपसी सहयोग और एकता को बढ़ावा देना और उनकी उपलब्धियों का सम्मान करना होता है। ग्राम गौरव मेलों में 16 राज्यों के 15000 लोगों ने भाग लिया। मेले में मटका दौड़, रूप सज्जा, सूर्य नमस्कार, चित्रकला, कुर्सी दौड़, रंगोली, कलश यात्रा सहित अन्य प्रतियोगिताएँ कराई गई साथ ही लोगों को सम्मानित भी किया गया।





आचार्य व्यक्तित्व विकास शिविर

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत 20 दिवसीय आचार्य व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री योगेश्वर दत्त जी (भारतीय अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी स्वर्ण पदक विजेता एवं राजीव गांधी खेल रत्न सम्मान) श्री रवि दहिया जी (भारतीय अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी रजत पदक विजेता) श्री सुमित अंतिल जी (विश्व पैरालिम्पिक चैंपियन भाला फेंक में स्वर्ण पदक विजेता।) नीतूजी (सरपंच झिंझौली गाँव) वीरेंद्र कौशिक जी (बीजेपी युवा मोर्चा हरियाणा प्रदेश) मंच पर रहे। देशभर से आये 80 युवा भैया-बहनों ने अपने गाँव को एक आदर्श गाँव बनाने का संकल्प लिया। सूर्या फाउण्डेशन से आदर्श गाँव योजना प्रमुख प्रमोद आसरे जी, गौतम जी (कृषि विभाग के प्रमुख, सूर्या फाउण्डेशन) मंच पर रहे! इस अवसर पर सोनीपत जिले में जैविक कृषि से जुड़े 5 किसान भाइयों का मंच से सम्मान भी किया गया।



कृषि एवं गौ-पालन

मिट्टी की महक अनुभव



धर्मपाल सिंह
ग्राम-बाबरखेड़ा,
काशीपुर, उत्तराखंड

यहाँ की मिट्टी में छिपे अनगिनत संभावनाओं को एक नए रूप में देखने का अवसर मिला जब धर्मपाल सिंह ने अपनी आंखों में उम्मीद और दिल में एक नया सपना संजोया। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा द्वारा विकसित पूसा बासमती धान PB-1847 के बीज को सूर्या फाउण्डेशन के सहयोग से पाने के बाद, उन्होंने अपने खेतों में इसे पहली बार बोने का साहस दिखाया। ग्राम बाबरखेड़ा निवासी श्री धर्मपाल कहते हैं कि इस बीज को अपने खेत में लगाने का निर्णय मेरे लिए अत्यंत लाभकारी साबित हुआ।

जैसे-जैसे फसल बढ़ती गई, हमारे मन में एक अद्भुत विश्वास पनपने लगा। यह धान, जो पहले के बीजों की तुलना में खरपतवार के प्रति अधिक सहनशील था। उर्वरकों की अत्यधिक मात्रा का प्रयोग न करते हुए भी इस धान की संरचना में जो मजबूती थी, उसने हमारे अचंभे को बढ़ा दिया।

रोगों से बचाव के लिए हमने जैविक कल्चर का प्रयोग किया, जिससे धान में बीमारियों की संभावना कम हो गई। जब फसल तैयार हुई, तो उसका उत्पादन हमें 26 क्विंटल प्रति एकड़ मिला। जब हमने धान को बेचने का निर्णय लिया, तो उसका मूल्य हमें 2690 रुपये प्रति क्विंटल मिला। यह मेरे पिछले अनुभवों से बहुत अधिक था, जहाँ मैं केवल 2200 रुपये प्रति क्विंटल प्राप्त करता था। यह वास्तव में मेरे जीवन का सबसे महंगा और सबसे सफल धान था। 105 दिनों की मेहनत के बाद, जब मैंने फसल काटी, तब मैंने महसूस किया कि यह केवल धान नहीं था, बल्कि यह मेरे सपनों की सफलता की कहानी थी। सूर्या फाउण्डेशन का मुझे प्राप्त सहयोग और मार्गदर्शन हमेशा मेरे दिल में बसा रहेगा।



**ये मिट्टी मेरे देश की प्यारी, लगती है मुझको महतारी।
किसान को फसल ये देती है, ये पूरा करती हर आस हमारी ॥**

पोषण वाटिका : स्वास्थ्य और समृद्धि की ओर एक कदम



अजब सिंह

ग्राम: भरतपुर,
काशीपुर, उत्तराखंड

श्री अजब सिंह, उत्तराखण्ड के एक छोटे से गाँव भरतपुर का एक साधारण किसान जिसका जीवन खेतों में बीतता था। किसान के लिए सबसे गौरव के क्षण लहलहाती हरी भरी फसल को देख कर ही होते हैं, खेत में तो ये अनुभव बहुत बार हुए लेकिन श्री अजब सिंह के घर के आंगन की जमीन हरी भरी नहीं थी, उन्हें इस कमी का एहसास होता था कि ताजी सब्जियों के लिए बाजार पर निर्भर रहना पड़ता था। उनके मन में कई बार ये विचार आया की छोटी सी जगह में भी, जैविक खेती से परिवार के लिए पौष्टिक सब्जियाँ उगाई जा सकती

हैं लेकिन अच्छे बीज न मिलने के कारण, उन्हें सफलता नहीं मिल पाई थी। बाद में उन्हें सूर्या फाउण्डेशन और पूसा के सहयोग से तुरई, लौकी, भिंडी, बैंगन, खीरा के सब्जियों के बीज मिल पाये, जिसे उन्होंने अपने घर के पास जमीन में बीज बो दिए। पहले तो उसे काम मुश्किल लगा, पर धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। पौधे उगने लगे, फिर फूल आए, और अंत में, हरी-भरी सब्जियाँ।

अब अजब सिंह के घर में रासायनिक खादों से मुक्त, स्वादिष्ट सब्जियाँ मिलने लगीं और उनके चेहरे पर चमक आ गई। अजब सिंह ने अपनी पोषण वाटिका से कुछ सब्जियाँ अपने पड़ोसियों को भी बाँटीं, जिससे उनके रिश्ते और मजबूत हुए।

अब अजब सिंह का घर सिर्फ चार दीवारों का मकान नहीं, बल्कि एक सुंदर, पौष्टिक, और खुशियों से भरा आशियाना बन गया था।



मल्टीलेयर खेती : आर्थिक समृद्धि और पहचान का रास्ता



मनोज कुमार

ग्राम : बसई का मंझरा,
काशीपुर, उत्तराखण्ड

पहले मैं अपनी जमीन पर पारंपरिक खेती करता था, लेकिन इससे आमदनी सीमित थी और मेहनत के बावजूद संतोषजनक परिणाम नहीं मिल पाते थे। मेरे जीवन में बड़ा बदलाव तब आया जब मेरा संपर्क सूर्या फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं से हुआ। उन्होंने हमारे गाँव में तीन दिवसीय मल्टीलेयर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। जिसमें मुझे खेती की इस नई तकनीक के बारे में जानकारी मिली।

मल्टीलेयर तकनीकी के तहत, मैंने सीखा कि एक ही जमीन पर जैविक तरीके से तीन से चार फसलें एक साथ उगाई जा सकती हैं। इसके बाद मैंने मल्टीलेयर तकनीक से 3000 sq.ft. में सब्जियों की खेती करना शुरू किया। सूर्या फाउण्डेशन ने मेरी आर्थिक मदद की, जिससे मुझे इस पद्धति को अपनाने में आसानी हुई।

मैंने लौकी, तुरई, करेला, धनिया, पालक, मेथी, चना और आलू जैसी सब्जियाँ लगाई। अगर मैं तुलना करूँ, तो पहले 3000 sq.ft. जमीन पर धान की खेती करके 6 महीने में केवल 5000 रुपये की आय होती थी। लेकिन मल्टीलेयर तकनीक अपनाने के बाद, मैं अब तक लौकी से 6000 रुपये, तुरई से 4000 रुपये, धनिया से 2500 रुपये, पालक से 4000 रुपये मेथी और चने से 3000 रुपये की आय कमा चुका हूँ। कुल मिलाकर अब तक लगभग 19,500 रुपये यानी लगभग तीन गुना ज्यादा मुनाफा।

इस पद्धति में खरपतवार की समस्या नहीं होती, जमीन का अधिकतम उपयोग होता है, पानी की बचत होती है। मल्टीलेयर कृषि प्रणाली ने न केवल मेरी आमदनी बढ़ाई, बल्कि मुझे एक नई पहचान भी दी। आज, मेरे खेत को देखने और इस तकनीक को सीखने के लिए दूसरे गाँवों के किसान आते हैं। मेरे खेत और मेहनत की सराहना होती है, जिससे मेरा नाम और पहचान भी बढ़ी है। यह अनुभव मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, और मैं सभी किसानों को इस तकनीकी को अपनाने की सलाह देता हूँ।





Dairy Farming and Gaushala Management Workshop

पशुपालन में लागत बढ़ना इस क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है। पशु आहार में निरंतर वृद्धि, दूध का उचित दाम न मिलाना, ऐसे अनेक समस्याओं के निवारण के लिए, गौशाला एवं डेरी का आर्थिक प्रबंधन कैसे अच्छा हो इस विषय को ध्यान में रखते हुए, सूर्या साधना स्थली झिंझौली में दिनांक 15 दिसंबर 2024 को डेरी फार्मिंग एवं गौशाला प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में देश के गौशाला आर्थिक प्रबंधन के विशेषज्ञ डॉक्टर प्रशांत योगी का मार्गदर्शन मिला। डेरी शुरू करने से पहले प्री-स्टार्टअप प्रशिक्षण, शेड डिजाइन, प्रति लीटर दूध की लागत में कमी पशु आयुर्वेद के टिप्स एवं पशुओं में होम्योपैथी उपचार जैसे अनेक विषयों पर गहन चर्चा हुई।



देशभर के 6 राज्यों से आए 22 प्रतिभागियों को श्री प्रवीण त्यागी जी ने जहर मुक्त चारा उत्पादन के तरीके साझा किये।

श्री सुधीर विद्वास जी ने गोबर गोमूत्र से आय बढ़ाने के विषय को भी बहुत अच्छे तरीके से रखा।



प्राकृतिक खेती आत्मनिर्भर कृषि की ओर एक सफल कदम

प्राकृतिक खेती आज के समय में न सिर्फ भूमि सुधार का तरीका है, बल्कि यह सस्ती और लाभप्रद खेती का विकल्प भी बन रही है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग से जमीन की उर्वरता कम हो रही है और जल प्रदूषित हो रहा है, ऐसे में प्राकृतिक खेती आत्मनिर्भर कृषि के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित हो रही है। इसी विषय को ध्यान में रखते हुए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, सोनीपत और सूर्या फाउण्डेशन के संयुक्त प्रयास से SAFAL (Sustainable Agro - Pastoral Farming For Augmentation in Farmer's Livelihoods) प्रोजेक्ट की शुरूआत की गई, जिसके अंतर्गत जिला सोनीपत के ब्लॉक गन्नौर, राई, खरखौदा और सोनीपत के 100 किसानों का चयन किया गया और सभी किसानों के खेतों का मिट्टी परिक्षण, बेसलाइन सर्वे एवं प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण संस्थान—गुरुकुल, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण भी कराया गया।

इसी प्रोजेक्ट के विस्तार हेतु 18 दिसंबर 2024 को एक दिवसीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम सेवा साधना स्थली, झिंझौली, सोनीपत में हुआ। इसका उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक खेती की तकनीकें सिखाना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित करना था।



कार्यक्रम में श्री एम.सी. डोमिनिक, कृषि जागरण के संस्थापक एवं मुख्य संपादक, उपकृषि निदेशक सोनीपत डॉ. पवन शर्मा, बी.के. प्रमोद जी (ब्रह्मकुमारी), श्री प्रमोद जी, जिला उद्यानिकी अधिकारी, सोनीपत और अन्य महत्वपूर्ण लोग शामिल हुए। प्रगतिशील किसान श्री सत्यवान सहरावत और श्री अभिषेक धामा ने अपने अनुभव भी साझा किए।





इस कार्यक्रम में किसानों को नर्सरी प्रबंधन और प्राकृतिक खेती के प्रमाणीकरण के बारे में जानकारी दी गई। प्राकृतिक खेती पोर्टल में पंजीकरण की प्रक्रिया भी समझाई गई। उद्यानिकी विभाग की योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

हरियाणा के कृषि विभाग के विशेषज्ञों ने प्राकृतिक खेती के फायदों और इसे कैसे अपनाना है, इस पर जानकारी दी।

किसानों को नई कृषि तकनीकों से अवगत कराते हुए आय बढ़ाने के सुझाव दिए गए।



इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिये अन्य ने किसानों ने भी प्राकृतिक खेती के तरीकों को साझा किये।

उपकृषि निदेशक श्री पवन शर्मा ने कहा, 'प्राकृतिक खेती केवल भूमि और जल की सुरक्षा का साधन नहीं है, बल्कि यह किसानों की आय को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण उपाय है।'

कार्यक्रम का समापन किसानों की सकारात्मक प्रतिक्रिया के साथ हुआ। यह प्रशिक्षण न केवल खेती को आधुनिक बनाने का प्रयास था, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करने वाला एक बड़ा कदम भी था।





इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस - राष्ट्रीय महाधिवेशन

7वें प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के अवसर पर आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से सूर्या फाउण्डेशन और इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन (INO) द्वारा 17 नवंबर, 2024 को सूर्या साधना स्थली, झिंझौली, दिल्ली में योग उत्सव और 18 नवंबर, 2024 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में 'विकसित भारत 2047 के निर्माण में योग-प्राकृतिक चिकित्सा का योगदान' विषय पर राष्ट्रीय महाधिवेशन का आयोजन किया गया।



डॉ ए मोहन राव योग उत्सव में भाषण देते हुए

योग उत्सव का आयोजन 17 नवंबर, 2024 को सूर्या साधना स्थली, झिंझौली, नई दिल्ली में किया गया। डॉ. ए. मोहन राव, नोडल प्रभारी, केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (CCRYN), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। योग गुरु विनोद मित्तल, अध्यक्ष व योगाचार्य विनोद शर्मा, उपाध्यक्ष, योग एवं मानव सेवा संस्थान, दिल्ली और डॉ. एन. के. शर्मा, रेकी ग्रैंड मास्टर और संस्थापक रेकी हीलिंग फाउण्डेशन, दिल्ली सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री अशोक कुमार तूर, राष्ट्रीय समन्वयक, INO, योगाचार्य संजय शर्मा, महासचिव, INO दिल्ली NCR, डॉ. संजय शर्मा, उपाध्यक्ष दिल्ली NCR, डॉ अजय तिवारी, महासचिव, INO उत्तरी क्षेत्र, दिल्ली, श्रीमती दीप्ति सिंह, सचिव, INO, दक्षिणी दिल्ली अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। भारत के विभिन्न प्रांतों से 250 से अधिक प्रतिनिधियों ने योग उत्सव



महाधिवेशन में मंच पर अतिथिगण व प्रतिनिधिगण।

में भाग लिया।

इस योग उत्सव का मुख्य उद्देश्य था—

- योग की शास्त्रीय परंपरा को बढ़ावा देना
- लोगों को योग के वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में शिक्षित करना
- योग के प्रचार-प्रसार के लिए योग प्रशिक्षण संस्थान केंद्रों का एक नेटवर्क बनाना

18 नवंबर, 2024 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में 'विकसित भारत 2047 के निर्माण में योग-प्राकृतिक चिकित्सा का योगदान विषय पर राष्ट्रीय महाधिवेशन' आयोजित किया गया। इसमें योग-प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद विशेषज्ञों, आधुनिक चिकित्सा डॉक्टरों, छात्रों और शुभचिंतकों सहित 2500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय केंद्रीय कानून और न्याय तथा संसदीय कार्य राज्य मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।



श्री वेद जी. वाइस चेयरमैन सूर्या फाउण्डेशन, केंद्रीय मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल जी का सम्मान करते हुए।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल, पूर्व सांसद, डॉ. भोला सिंह सांसद, श्री शंकर सिंह सान्याल, अध्यक्ष, हरिजन सेवक संघ, आचार्य लोकेश मुनि, संस्थापक अहिंसा विश्व भारती, जगतगुरु श्री श्री वचनानंद स्वामी,

पंचमसाली जगद्गुरु पीठ (हरिहर), कर्नाटक, ब्रिगेडियर डी. सी. पंत (सेवानिवृत्त), सूर्या फाउण्डेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, डॉ. अनंत बिरादार, राष्ट्रीय अध्यक्ष-INO, डॉ. आर. एस. डबास व डॉ. डी. एन शर्मा दोनों राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-INO सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

श्री जे. पी. नड्डा, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री और पद्म श्री जयप्रकाश अग्रवाल ने उपस्थित प्रतिनिधियों को वचुअली संबोधित किया। श्री जे. पी. नड्डा ने कहा कि सूर्या फाउण्डेशन - INO ने नेचुरोपैथी के प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है। भारत सरकार हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के अनुसंधान और विकास को बढ़ावा दे रही है। श्री जयप्रकाश जी ने भारत के सभी भागों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया और सभी नेचुरोपैथी चिकित्सकों से कहा कि वे अपने रोगियों को लाभ देने से पहले नेचुरोपैथी को स्वयं अपनाएं। उन्होंने सलाह दी कि प्रत्येक नेचुरोपैथी चिकित्सक को सप्ताह में एक बार जल चिकित्सा, उपवास और मिट्टी चिकित्सा और फलाहार का पालन करना चाहिए। डॉ. अनंत बिरादार ने अपने प्रारंभिक भाषण में कहा कि सभी हितधारकों के सुझावों के साथ नेचुरोपैथी बिल-2023 को यथाशीघ्र लागू किया जाना चाहिए, साथ ही इस बिल के माध्यम से सभी नेचुरोपैथी डॉक्टरों को पंजीकरण भी दिया जाना चाहिए व अनुदान सहायता (Grant-in-Aid) भी शीघ्र ही पुनः शुरू की जानी चाहिए ताकि नेचुरोपैथी का लाभ प्रत्येक घर तक पहुँचे। जगतगुरु श्री श्री वचनानंद स्वामी ने कहा कि आज एलोपैथी को निचली अदालत, आयुर्वेद को उच्च न्यायालय तथा योग-नेचुरोपैथी को सर्वोच्च न्यायालय माना जाता है तथा विश्व के 106 देशों में नेचुरोपैथी को उपचार के लिए अपनाया

जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि श्री जयप्रकाश जी महात्मा गांधी तथा विनोबा भावे की तरह नेचुरोपैथी को बढ़ावा दे रहे हैं तथा उन्होंने सरकार से नेचुरोपैथी के विकास के लिए और अधिक कदम उठाने का अनुरोध किया। आचार्य लोकेश मुनि ने अपने दिव्य भाषण में महाधिवेशन की भव्य सफलता के लिए शुभकामनाएँ दी। उन्होंने आगे कहा कि अधिक से अधिक नेचुरोपैथी डॉक्टर तैयार किए जाएं ताकि अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें। डॉ. भोला सिंह ने भी महाधिवेशन को संबोधित करते हुए महाधिवेशन की सफलता की कामना की। श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय केंद्रीय विधि एवं न्याय तथा संसदीय कार्य राज्य मंत्री महाधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। अपने भाषण में श्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि मानव

शरीर पांच प्राकृतिक तत्वों से बना है। यदि ये पांच तत्व संतुलित हैं तो

शरीर में कोई रोग नहीं होगा तथा यदि इन पांच तत्वों में असंतुलन है तो शरीर में रोग आ जाएंगे। योग प्राकृतिक चिकित्सा के लंबित बिल के बारे में उन्होंने कहा कि योग-प्राकृतिक चिकित्सा बिल को पारित करवाने की शक्ति यदि किसी में है तो वह श्री नरेन्द्र मोदी ही हैं, जो असंभव को भी संभव कर सकते हैं। उन्होंने महिला आरक्षण बिल, जो संसद में लंबित था, का उदाहरण देते हुए बताया कि उक्त बिल को पारित करवाकर उन्होंने इतिहास रच दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि बिल को पारित करवाने का प्रयास किया जाएगा, क्योंकि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री पांच प्राकृतिक तत्वों के साथ अपना जीवन जी रहे हैं, इसलिए कहा जाता है कि 'मोदी है तो मुमकिन है', इसलिए आपका बिल पारित होना भी मुमकिन है।

मुख्य अतिथि द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए सात वरिष्ठतम प्राकृतिक चिकित्सकों को सम्मानित किया। जैसे—



महाधिवेशन में बैठे हुए प्रतिनिधियों का विहंगम दृश्य



डॉ अरुण शर्मा USA को अवार्ड देते हुए केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल जी



डॉ कुमुद जोशी जी, मुंबई को अवार्ड देते हुए केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल जी।

1. महात्मा गांधी इंटरनेशनल अवॉर्ड

डॉ. अरुण शर्मा, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय महायोग एवं प्राकृतिक स्वच्छता संस्थान, यूएसए तथा

डॉ. पूजा मडेला, संस्थापक निदेशक, डॉ. पूजा योग एवं एकीकृत मन-शरीर चिकित्सा केंद्र, न्यूजीलैंड

2. डॉ. वेंकटराव नेशनल अवॉर्ड

डॉ. एस एन पांडे, चांसलर, ग्लोबल ओपन यूनिवर्सिटी, दीमापुर नागालैंड

3. डॉ. विठ्ठलदास मोदी नेशनल अवॉर्ड

डॉ. कुमुद जोशी, ट्रस्टी, कुष्ठ निवारण समिति, शांतिवन पनवेल, मुंबई, महाराष्ट्र

4. डॉ. राजकुमारी अमृतकौर नेशनल अवॉर्ड

डॉ. जी विजयालक्ष्मी, प्राकृतिक चिकित्सा परामर्शदाता, हैदराबाद, तेलंगाना

5. बालकोबा भावे नेशनल अवॉर्ड

डॉ. भरत भाई शाह, निदेशक, निसर्गोपचार केंद्र, विनोबा आश्रम, वडोदरा, गुजरात

6. महावीर प्रसाद पोद्दार नेशनल अवॉर्ड

डॉ. रमेश टेवानी, संस्थापक, संत हरिदा राम

मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज, भोपाल, मध्य प्रदेश

मुख्य अतिथि द्वारा INO द्वारा निर्मित स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

योग-प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद के क्षेत्र में हुए नवीनतम विकास के बारे में प्रतिनिधियों को जानकारी देने के लिए सत्र का आयोजन किया गया था। सत्र में निम्नलिखित डॉक्टरों ने भाग लिया—

(i) डॉ. संगीता नेहरा, निदेशक, आयुष विभाग, हरियाणा को सत्र के अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया

(ii) श्री बिस्वरूप राय चौधरी, निदेशक, इंडो-वियतनाम मेडिकल बोर्ड और HIIMS ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स। उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से कैंसर के उपचार के लिए नवीनतम पद्धति के बारे में विस्तार से बताया।



HIIMS के प्रमुख डॉ. बिस्वरूप राय चौधरी का सम्मान करते हुए डॉ. अनंत बिरादार राष्ट्रीय अध्यक्ष-INO

- (iii) डॉ. आर. एस. डबास, निदेशक, दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ़ नेचुरोपैथी, दिल्ली
- (iv) आचार्य मोहन गुप्ता, संस्थापक नेचुरल लाइफ़ स्टाइल को प्राकृतिक चिकित्सा के विशेषज्ञ होने के नाते सह-अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया।
- (v) अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील ने अपने भाषण में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में योग प्राकृतिक चिकित्सा के एकीकरण हेतु कानूनी पहलुओं का वर्णन किया। उन्होंने यह भी बताया कि भारत सरकार की आयुष्मान भारत योजना में आयुष के अंतर्गत आने वाली चिकित्सा पद्धतियों को शामिल नहीं किया गया है। आयुष्मान भारत योजना में योग-प्राकृतिक चिकित्सा को उचित मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है।
- (vi) डॉ. हिमांशु शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (NIN), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने विस्तार से बताया कि योग और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से वृद्ध लोगों का किस प्रकार उपचार किया जा सकता है।
- (vii) डॉ. शिप्रा चौधरी, बीएनवाईएस, एमडी, वरिष्ठ सलाहकार-महिला स्वास्थ्य और एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ, बालाजी नेचरक्वोर वेलनेस सेंटर, नई दिल्ली ने बताया कि वर्तमान स्वास्थ्य सेवा प्रणाली हमारी पारंपरिक उपचार प्रणाली अर्थात् प्राकृतिक चिकित्सा और वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के सहयोग के बिना अधूरी लगती है। इसलिए इस प्रणाली को भी वर्तमान स्वास्थ्य प्रणाली के साथ ही अपनाया जाना चाहिए।

सत्र के अंत में अध्यक्ष डॉ. संगीता नेहरा ने प्राकृतिक चिकित्सकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का सारांश समझाते हुए सत्र का समापन किया।



बालाजी नेचरक्वोर वेलनेस सेंटर के महासचिव श्री मामराज अग्रवाल, केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल जी से अवॉर्ड प्राप्त करते हुए।

अपराह्न में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ योग-प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद के एकीकरण के महत्व और आवश्यकता के बारे में चर्चा करने और प्रतिनिधियों को जानकारी देने के लिए सत्र आयोजित किया गया। निम्नलिखित डॉक्टरों ने सत्र में भाग लिया—

- (i) डॉ. एस सी मनचंदा, वरिष्ठ परामर्शदाता, हृदय रोग विशेषज्ञ, सर गंगा राम अस्पताल, नई दिल्ली, अध्यक्ष
- (ii) डॉ. अशोक कुमार वाष्णेय, आयोजन सचिव, आरोग्य भारती, नई दिल्ली
- (iii) डॉ. भरत भाई शाह, निदेशक-निसर्गोपचार केंद्र, वडोदरा, गुजरात पैनल विशेषज्ञ। और
- (iv) डॉ. एस एन पांडे, चांसलर - द ग्लोबल ओपन यूनिवर्सिटी, दीमापुर, नागालैंड

पैनल चर्चा में डॉ एस एन पांडे ने अपने उद्घाटन भाषण में प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व और वास्तविक अर्थ पर जोर दिया और इस पद्धति को विस्तार से बताया कि इसे स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के साथ पारंपरिक चिकित्सा पद्धति का कैसे एकीकृत किया जा सकता है। इसके उपरांत निम्नलिखित डॉक्टरों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

- (i) डॉ. के.पी. कोचर, विभागाध्यक्ष, फिजियोलॉजी विभाग, एम्स, नई दिल्ली ने कहा कि वे अपने संस्थान में मेडिकल छात्रों को पढ़ा रहे हैं कि योग प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान उतनी ही उपयोगी है जितनी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान क्योंकि इससे भी शरीर में वही शारीरिक परिवर्तन होते हैं जो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान से होते हैं और वांछित परिणाम मिलते हैं। इसलिए उन्होंने एम्स, नई दिल्ली में योग-प्राकृतिक चिकित्सा अनुभाग की स्थापना की है और रोगियों को योग का अभ्यास करने और अपने दैनिक जीवन में प्राकृतिक चिकित्सा का पालन करने की सलाह दी जाती है।
- (ii) डॉ. मीनाक्षी चस्वाल, निदेशक और विभागाध्यक्ष, फिजियोलॉजी अटल बिहारी वाजपेयी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (ABVIMS) और RML अस्पताल, नई दिल्ली ने जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के दबाव को कम करने के लिए योग-प्राकृतिक चिकित्सा को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया।
- (iii) श्री दीपक सिंघल, आईएएस (सेवानिवृत्त), पूर्व मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार ने सरकारी कर्मचारियों को दी जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किए और इस

बात पर जोर दिया कि योग-प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य प्रणाली को सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि योग-प्राकृतिक चिकित्सा का ज्ञान और लाभ सरकारी कर्मचारियों सहित आम लोगों तक पहुँचे।

- (iv) डॉ. मनु भाई गौड़, निदेशक-प्रधानाचार्य, चौधरी ब्रह्म प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान, दिल्ली ने योग-प्राकृतिक चिकित्सा - आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देते हुए अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आयुष को आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली के साथ एकीकृत करने से अधिक सकारात्मक परिणाम मिलेंगे और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों का बोझ बहुत महत्वपूर्ण तरीके से कम होगा।

सत्र के अंत में डॉ. एस. सी. मनचंदा ने सत्र के अध्यक्ष के रूप में पैनल चर्चा का सारांश बताया और डॉक्टरों द्वारा व्यक्त विचारों को विस्तार से समझाया।

इसके बाद प्राकृतिक चिकित्सा की वर्तमान सरकारी नीति, प्राकृतिक चिकित्सकों की वर्तमान स्थिति तथा देश में प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अपनाए जाने वाले उपायों पर चर्चा करने के लिए माननीय सांसदों के साथ संसद सत्र का आयोजन किया गया।

इस सत्र में निम्नलिखित माननीय सांसदों— श्री राजेंद्र अग्रवाल जी, डॉ. भोला सिंह जी, श्रीमती कमलजीत सहरावत जी एवं श्री योगेंद्र चंदोलिया जी ने भाग लिया—

माननीय सांसदों के बीच चर्चा के दौरान प्रत्येक सदस्य ने स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त किए।



श्री राजेंद्र अग्रवाल
माननीय पूर्व सांसद, मेरठ



डॉ. भोला सिंह
माननीय सांसद, बुलंद शहर



श्रीमती कमलजीत सहरावत
माननीय सांसद,
पश्चिमी दिल्ली



श्री योगेंद्र चंदोलिया
माननीय सांसद,
उत्तर पश्चिमी दिल्ली

श्रीमती कमलजीत सहरावत जी ने कहा कि योग-प्राकृतिक चिकित्सा हमारी भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति है जो हमारे आचार-विचार तथा परंपराओं पर आधारित है तथा यह अत्यंत उपयोगी है। तत्कालीन वैद्यों द्वारा हर रोग का उपचार किया जाता था। लेकिन आजकल चिकित्सा पद्धति में बहुत परिवर्तन तथा प्रगति हुई है, लेकिन रोगों का दबाव दिन-प्रतिदिन उतना ही बढ़ता जा रहा है। हमें अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धति को अपनाना चाहिए जिसे आयुष पद्धति के अंतर्गत लाया गया है। उन्होंने कहा कि हम दिल्ली के सभी सांसद एक साथ हैं और जब भी संसद में योग-नेचुरोपैथी विधेयक पर चर्चा होगी, हम एक स्वर से इसका समर्थन करेंगे। सभी सांसद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सरकार को

आम लोगों के बीच नेचुरोपैथी को बढ़ावा देने और प्रचार-प्रसार करने के लिए और अधिक कदम उठाने चाहिए। योग-नेचुरोपैथी संसद बहुत ही सौहार्दपूर्ण तरीके से संपन्न हुई।

राष्ट्रीय महाधिवेशन के दौरान दिल्ली NCR के स्कूली विद्यार्थियों के बीच स्वास्थ्य संवाद का भी आयोजन किया गया। इससे पहले INO प्रतिनिधियों द्वारा कक्षा 9 से 12 तक के स्कूली विद्यार्थियों के बीच योग-प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में ज्ञान और जागरूकता फैलाने के लिए 'कौन बनेगा स्वास्थ्य रक्षक' प्रतियोगिता के माध्यम से पहले बोया गया बीज योग-प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में विकसित हुआ है। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि आस-पास के स्कूलों के विद्यार्थियों को योग-प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में अपने ज्ञान को स्वास्थ्य संवाद में प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जाए। स्वास्थ्य संवाद में 400 से अधिक स्कूली विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों और अभिभावकों के साथ भाग लिया और योग और प्राकृतिक चिकित्सा के ज्ञान और लाभों के बारे में जानकारी का आदान-प्रदान किया।

इसके उपरांत मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के योग छात्रों द्वारा योगासन की विभिन्न मुद्राओं का एक संयोजन (Yoga Fusion) भी प्रस्तुत किया गया। इसे उपस्थित लोगों ने खूब सराहा और प्रशंसा की। सभी योगाभ्यास प्रतिभागियों को मंच पर सम्मानित किया गया।

महाधिवेशन के अंत में समापन समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पोते डॉ. सुब्रमण्यम शर्मा जी ने मुख्य अतिथि के रूप में की और डॉ. ईश्वर एन. आचार्य, अनुसंधान



अधिकारी, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY), आयुष मंत्रालय भारत सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। डॉ. सुब्रमण्यम शर्मा ने पूरे जोश के साथ अपना व्याख्यान दिया और कहा कि देश में योग और प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने की बहुत अधिक जरूरत है क्योंकि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने दुनिया के कम से कम 180 देशों में योग को मान्यता दिलाई है। इसलिए हमें प्राकृतिक चिकित्सा को भी उसी तरह देश के साथ-साथ विदेशों में भी बढ़ावा देना होगा। उन्होंने मांग की कि सरकार को जल्द से जल्द देश

में प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए कुछ सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। महाधिवेशन का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

राष्ट्रीय महाधिवेशन के दौरान विभिन्न प्राकृतिक उत्पाद कंपनियों द्वारा दर्शनी लगाई गई जिसमें प्राकृतिक उत्पादों व उपकरणों को विक्रय हेतु प्रदर्शित किया गया। साथ में विभिन्न प्राकृतिक चिकित्सा उत्पाद विक्रेताओं और अस्पतालों के स्टॉल भी लगाए गए थे।

महाधिवेशन को विस्तार से प्रिंट मीडिया के प्रकाशित व दूरदर्शन में प्रसारित किया गया।



महाधिवेशन में लगाए गए स्टॉल की झलकियाँ



SURYA THINK TANK

RECOMMENDATIONS FOR BUDGET 2025-26

INTRODUCTION

In the next three years, India is expected to become the third largest economy in the World, with GDP of USD 5 trillion. However, the government has, set a higher goal of becoming a developed country by 2047. With the journey of reforms continuing, this goal is achievable. The reforms will be more purposeful and fruitful with the full participation of the State Governments. It will be more meaningful if the changes percolate down at the district, block and village levels in areas such as health, education, land and labour in which States have a big role to play. There is however, considerable scope for the growth rate to rise well above 7% by 2030, as the overall investment climate is increasingly becoming more favourable with sustained enhancement in the ease of doing business.

Surya Foundation Think Tank comprising a group of experts deliberated on various

issues related to the forthcoming Union Budget 2025-26. Suggestions / Recommendations of the Think Tank are given in the succeeding paras.

RECOMMENDATIONS

MIDDLE INCOME TRAP

The middle-income trap occurs when an economy fails to transition from middle to high-income status and get stuck due to stagnant growth, lack of innovation and outdated economic models. To achieve high middle-income group status India's per capita income has to go up to USD 14000 from USD 2700. Most of the low middle-income group economies namely Turkiye, Egypt and Brazil and many others languish in the middle-income trap. In order to avoid the middle-income trap, India need to more open to free trade and align itself with global value chains.

Indian economy can not only bank upon domestic demand, it has to enhance the exports along with taking measures to avoid increase inequality of every kind-income, consumption, geography, wealth, gender and inheritance.

Fact is only three to four countries in the past hundred years have transformed themselves into developed nations- Japan in the 19th and 20th centuries, Taiwan and South Korea in the mid-20th Century and China in the 1990's. The three markers for such transformation are, one is farm sector reforms, which would lead to higher rural surplus; the second is double-digit sustained growth in manufacturing, and the third is trade surplus for higher value added products.

Economy must invest, ensure the infusion of new global technologies and develop an environment conducive to domestic innovation.

EMPLOYMENT LINKED INCENTIVE SCHEME (ELI)

At present there is a disconnect between India's booming economy and its stagnating job market. This could derail the India's long-term economic aspirations. India's demographic dividend, often highlighted as a critical driver of future growth, could turn into demographic liability if the country fails to generate sufficient employment opportunities. India has a short span of 15 years to reap benefits of demographic dividend and we should not lose the opportunity. An unemployed young population will lead to inequality and the social unrest which can potentially lead to an economic downturn.

Given the challenging employment scenario, the ELI scheme is a meaningful policy intervention. The ELI scheme's targeted incentive could catalyse the dual objectives of industrial expansion and employment generation. There is a scope to consider for expanding the scheme to include sectors such as technology, healthcare and renewable energy, Skill development-industries that not only promise significant job creation but are also aligned with futuristic industries. Constant monitoring mechanism could be devised with necessary checks and balances to ensure that ELI scheme should create long term, stable employment instead of low wage, temporary positions. Large companies with greater hiring capacities and resources may be better positioned to take advantage of the incentive offered under the three newly announced Employment Linked Incentive schemes.

The main concerns are that job creation will concentrate in high hiring industries and regions and employers may prioritise quantity over quality, driving down wages. The others issues are exclusion of staffing agencies and refund of subsidy for short-term employment may discourage employer participation. There is a need to encompass mechanisms to redress the issue of job creation in specific sectors or regions. Based on the experience of its implementation Government may consider extending it on optional basis beyond top 500 companies.

PRODUCTION LINKED INCENTIVE (PLI) SCHEME

Expand the PLI Scheme beyond the 14 Sectors to inter alia include small

scale labour intensive sectors namely handicrafts, Leather and footwear, toys, kitchenware, gems and Jewellery and also cover Space sector.

WOMEN EMPOWERMENT



Special policy initiative need to be implemented with major focus to enhance Women participation in labour force, as India currently has the lowest female labour force participation rate at 32%, among the world's top 10 economies.

CAPITAL SPENDING

Government accounts show that Capital Spending on public infrastructure projects by the Centre has shrunk 15% this year. Public Infra spends that have spearheaded growth in recent years need to lead the way. The Centre's Rs 11.11 lakh crore Capex goal for the year acknowledges this, and it must now ramp up these spends to get closer to, if not entirely meet that target. The NITI Aayog should analyse/ study the kind of bottleneck in stepping up capital expenditure and suggest remedial measures.

Re-prioritisation of capital expenditure will help in directing more resources to sectors such as roads and railways, where the spending pace has been rapid. This might mean to cut in capital outlays for

sectors that have failed to spend a large portion of the resources allocated to them. Capital Expenditure should continue to be the engine of growth for the economy. The forthcoming budget should enhance the allocation for capex.

CARBON BORDER ADJUSTMENT MECHANISM (CBAM)

The European Union (EU) CBAM designed to tax imports based on embedded carbon emissions will fully apply by 2026, to Steel, Cement, Aluminium, Electricity, Fertilizers and Hydrogen. The CBAM could cut India's GDP by 0.12%. This burden will be heavy on Iron & Steel as 28% of India's exports is to EU and it could fall by 2.7% by 2030. This unilateral measure effectively shifts the decarbonisation burden on to developing countries.

The strategy to manage CBAM should be :

- Take feedback and identify barriers from affected industries.
- Create a domestic Carbon Credit trading scheme.
- Levy a Carbon tax on imports.
- Diversify the export market beyond the EU.
- To design a rebate mechanism for exporters particularly for Micro Small and Medium Enterprises.
- To exclude MSMEs from CBAM after negotiating with EU and UK.
- Press developed countries to fulfil their commitments on climate finance and technology transfers now going much

beyond the earlier USD 100 billion annual climate finance goal.

- Push within the WTO for a Global Carbon pricing mechanism that is transparent, equitable and universally apply.

IMPORT DUTY ON STEEL

There is a dumping of finished Steel from China. To safeguard the interest of domestic steel manufacturers, basic custom duties need to be increased. Despite a consistent increase in steel inventory over the last two years, imports have continued to rise, it is displacing domestic players as it is affecting profit margin of the manufacturers and further it will disrupt the investment cycle. India-ASEAN, FTA's is being used to route lower priced metal from China. Nearly 40% of China's exports are to ASEAN's countries, Korea & Japan which have FTA's in place with India. As a result, these nations can potentially act as a pass through country for Chinese exports to India. In view of this, the basic custom duties should be increased to 15% from 7.5%. For immediate relief the safeguard duty should be levied.

MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES (MSME)

High cost of credit is the single biggest roadblock in the growth of 6.5 crore MSMEs which could range between 15% and 28% depending on the nature of financial institutions. Further policy measures to enhance their competitiveness could include steps to integrate them with international markets, digital support for global competitiveness



(digital, AI Skilling) ease of doing business and easy availability of credit at affordable cost. Classification norms for NPAs should be enhanced to 180 days from the present 90 days.

JOB CREATION

Demography is a major factor in propelling the Indian Economy as the World's fastest growing big economy. The median age is around 28 years and 63% of population is of working age. However, the labour force participation rate stood at 55.5% as per the last available data. This is due to falling labour intensity, as growth is led by services sector rather than manufacturing. Therefore while we are not experiencing jobless growth, more steps are needed to harness the demographic dividend.

An overall outlay of Rs 1.48 lakh crores has been allocated to create 41 million jobs for the youth over the next 5 years in the budget 2024-25. There has been some concern about economic growth not fully translating into employment growth. India's high youth unemployment is a structural threat to its long-term growth potential. To pick up the broader employment the government must do more, including filling lakhs of vacancies in its own ranks expeditiously.

The creation of jobs at present is limited due to insufficient demand, caused by low consumption and the lack of private investment. Jobs should not be created in top 500 companies only, which are largely capital intensive. Need to create jobs in MSME's in labour intensive sectors, in small towns. Raising wages in MGNREGA will stimulate demand.

To create jobs, first and foremost is to continue with innovative reforms. Due to abundance of labour, capital led economic growth is not fully ideal. The reluctance of micro, small and medium enterprises, the backbone of employment, to grow in size and scale as well as that of large business houses to foray into labour intensive sectors can be attributed to the compliance burden and cost imposed by outdated labour laws. A via media needs to be found regarding implementation of labour codes by 2 to 3 States to break the logjam.

MAHATMA GANDHI NATIONAL RURAL EMPLOYMENT GUARANTEE SCHEME (MGNREGS) ALLOCATION

For the financial year 2024-25 Rs 86,000 crore has been allocated to the MGNREGS. This may be Rs 26,000 crore more than last year's allocation of Rs 60,000 crore, but it is still Rs 19,297 crore less than the scheme's actual expenditure of Rs 1.05 lakh crore in the financial Year 2023-24. In the year 2024-25 allocation for the MGNREGS is just 1.78% of the budgetary allocation, a 10-year low in the scheme's funding. The lower allocation artificially suppresses the demand for work under the scheme. The focus on MGNREGS must continue as it is demand based rural employment scheme.

MGNREGS needs to be streamlined by having :-

- Greater diversification for permissible work
- Decentralised fund management
- Review wage structure
- Adequate budget to ensure sufficient and continuous flow of funds
- Necessary checks and balances with the support of States to address leakages in Fund Management

EXPORTS

Trade is a critical growth engine and India's global trade share does not match its economy's size and it is yet to capitalise on the opportunity presented by China's withdrawal from labour intensive production. India needs to relook to reduce tariffs, non-tariffs barrier as well as Foreign Direct Investment (FDI) curbs and rethink of the reluctance towards multilateral pacts such as Regional Comprehensive Economic Partnership (RCEP).

In Financial Year 2014, India's GDP was USD 2010 billion with merchandise exports at USD 314 billion and manufacturing accounting for 15% of GDP. In 2024 GDP has grown to USD 3900 billion and exports reached USD 437 billion, but manufacturing's share in GDP dropped to 13%. The shrinking role of manufacturing and its decreasing export contribution needs to be looked into. Inter-alia, issues are high input cost, complex labour laws and high logistic cost.

The high inputs cost are on account of high cost of raw material, energy and financing. Due to rigid labour laws companies can't do layoffs and this comes as a hindrance to scale up. Both internal and shipping cost adds to logistic cost. The high cost and low ease of doing business also hurt labour intensive exports. All of which have been declining over the period.

The economic policy should focus on building efficient, product focused supplier chains that streamline raw material sourcing, production, logistic and customs clearance. Interest equalisation scheme on pre and post shipment benefit should be extended to services exporters.

Tea Exports : The existing conflict between Israel and Palestine spreading to other West Asian countries particularly to Iran, can get adversely impact tea export. Iran is one of the top buyers of Indian tea, further it will increase the logistic challenges. Tea export issues needs to be addressed by discussing with Tea Associations.

TRADE LINKS

The major way to deal with geopolitical situation and challenging external economic conditions is revisiting trade links that is free trade agreements (FTAs) including RCEP though it continues to be China centric. India already has trade agreements with almost all RCEP countries. Products made in those other countries will naturally have larger amounts of China value added. This will freeze out India. India must constantly re-evaluate its approach to trade agreements and other in progress deals such as those with the EU, UK including

RCEP. FTAs should have clause for investment in India.

REAL EFFECTIVE EXCHANGE RATE (REER)

REER is a widely used measure of a currency's value compared to its key trading partners. A value of above 100 indicates over valuation, and for the last decade, the rupee has hovered above this benchmark. According to the Reserve Bank of India's REER index, the rupee stood at 5.5% above its fair value. However, in view of REER, slight depreciation of the rupee with in tolerance band, as it remains over valued against trading partners, could be considered.

AGRICULTURE



Agriculture is engaging nearly 46% of the workforce, it's contribution to GDP is about 18%. If current growth trends continue this disparity will worsen. While overall GDP has grown at 6.1% annually since 1991-92, agricultural GDP lags at 3.3%. By 2047, agriculture's share in GDP might shrink to 7-8%, yet it could still employ over 30% of the work force if significant structural changes are not implemented.

Several initiatives have been rolled out to bolster farmers prosperity and sustainable agricultural growth namely PM-KISAN SOIL HEALTH CARD SCHEME, promoting millets; agriculture infrastructure fund. Projections indicate that the total demand for food grains in 2047-48 will range from 402 million tons with production anticipated to exceed demand by 10-13% under the normal scenario as demand shifts away from food grains. However, to meet this new demand sustainability, significant investment in agriculture research, cold storages, supply-chain infrastructure and policy support are required.

The States that have posted the highest agricultural growth in recent times are the ones shown to have diversified most into Livestock, Aqua and Horticulture farming sub-sectors.

Rationalisation of Agricultural Schemes: Recently 18 centrally sponsored agricultural schemes with a total allocation of Rs 101,321 Crore have been rationalised into two schemes namely; Pradhan Mantri Rashtriya Krishi Vikas Yojna and Krishonnati Yojna.

The rationalisation into two schemes will give more funding flexibility to the States to reallocate funds from one component to another based on their own needs and avoid duplication. The Central and State share is around 68 and 32 percentage respectively. Impact analysis of the rationalisation of the schemes should be done.

Scope of Minimum Support Price (MSP)
: The facility of Minimum Support Price should be extended to vegetables, fruits

and newly grown millets accompanied by a gradual shift away from staples like Wheat and Paddy. Pilots may be tried in select States.

Government may consider incentivising farmers to shift from growing selective crops, that they cultivate to claim support prices. In case of such selective crops, the government also has to step in to store the excess in warehouses where they end up rotting or attract pests such as rats. A subsidy not to farm selective crops not only addresses waste in the grain storage mechanism, but more importantly, it frees up support prices for a larger variety of crops that the country is deficit in. It will be an efficient alternative to MSP.

INFLATION

Excluding food prices from headline inflation will not depict the realistic picture of inflation and will impact the strategy of RBI to manage inflation. Inflation rate basket should represent the items consumed by the consumers. The weightage of food in overall consumer price inflation is at 46%, which was done in 2011-12 and RBI could consider it to bring it down to a more appropriate level. However, it is important to ensure that the headline inflation is aligned with the flexible inflation target of 4% with tolerance band of +/- 2%, allowing RBI to balance inflation with growth concerns.

PRIVATE INVESTMENTS IN INFRASTRUCTURE

Centre contributed 49% of total investments on infrastructure and State governments 29% leaving the balance to be covered by

private sector. The Private sector is shying away because of the massive capital requirements, market risks experienced due to delay in completion of projects which impacts returns and gestation period. These issues/ concerns needs to be addressed by having discussion with private sector investors for crowding in private investment in Infrastructure sectors.

DISINVESTMENT

At present the government owns 389 public sector enterprises and its holding in these enterprises is valued over Rs 44 Lakh Crore with the stake of around 67% on an average basis. Out of 389 enterprises if government reduces its stake to 33% from 67% in the top 50 PSU's it will fetched them around Rs 52 Lakh Crore at the current price to book of these companies.

To begin with by reducing its holding in the well performing enterprises in top thirteen companies to 51%, the government will get Rs 2.9 Lakh Crore and taking it down to 33% will fetch Rs. 5.7 Lakh Crore. These proceeds could be used for debt reduction, capex funding and eco growth. An institutionalised mechanism could be developed for scrips to disinvest and across what time frame to have transparency in the disinvestment system.

LEGISLATION ON GIG WORKERS

As the labour code on gig workers has been delayed by the States. The way out is to have a separate bill which will offer social security benefits to gig workers in India. As a part of social responsibility the companies operating in gig economy should

be ask to allocate part of their revenues says 0.5% to 1.5% to fund some of these social security benefits. At present about 10 Million gig workers are in India out of 550 million plus labour force. This is likely to keep growing and be one of the biggest sources of employment generation in the country. The key issue is to recognise the employment relationship in gig work.

ECONOMIC NATIONALISM

Adopt economic nationalism that is pragmatic and starts delivering results in few years. Have sector specific pragmatic policies, which evolve and are calibrated. Use of tariff and non-tariff barriers plus support for domestic firms to help them gain market share in India and globally. Even FDI from China could be considered on selective basis. Import of capital from China is better than import of goods. Any import substitution must look at cost. Expensive import substitution is not to be advantage of any body. Need efficient import substitution.

CLIMATE GOALS

India's international commitment, the major ones being the reduction of emission intensity of GDP by 45% by 2030 compared to 2005 levels, and achieving net Zero Greenhouse gas emissions by 2070. It is estimated that India will need an average annual funding of USD 100 billion between 2021 and 2030 to finance its mitigation plan, while current investments are only USD 44 billion- leaving a huge gap. A major proportion of this investment would need to come from the private sector, given the government's fiscal constraints and limited

support from development financial institutions and multilateral development banks for these activities. For raising sizeable debt in rupee terms to meet the climate finance requirement through foreign fund inflows requires developing the domestic bond market, which currently lacks sufficient depth and liquidity, as well as deepening the currency hedging market and reducing costs.

The government's top priority should be to establish an unambiguous taxonomy defining green investments. The taxonomy should be aimed at attracting institutional investors with a view to incentivising private investment in green projects, the Government may consider offering credit guarantees for debt raising, reducing withholding tax for foreign investors and providing tax concessions. Also consider adopting a climate budgeting model similar to the established gender budgeting.

Transition to a low carbon economy should be done in a calibrated and systematic manner so that to avoid destabilising effects on the financial systems especially after the President elect of US approach towards climate goals. Govt may come out with the roadmap/white paper on climate goals.

UNIFIED LAND CODE

Land is a key factor of production and an important building block of the economy. Creating a land database and digitising it is an important land reform that will help both industry and agriculture. There is a need for a unified land code that can substitute and/or subsume various land laws. The seven sub rules reiterated by

Supreme Court for acquisition of land needs to be considered while framing the unified land code.

HEALTHCARE SYSTEM

Budgetary allocation in the budget 2024-25 for the Healthcare System is up 12.6% from last year including allocation for the public insurance scheme, Ayushman Bharat. In view of this, there is an urgent need to step pace of setting up teaching hospitals in every district to ensure a steady flow of trained doctors and nurses to service the healthcare system and provide access to basic healthcare across the country. Affordability, Access and Quality must be three pillars built at the same pace for India to be Viksit on the healthcare front. India's public expenditure on healthcare is only 2.1% of GDP. It needs to be gradually increased to 6%.

EDUCATION POLICY

National Education Policy suggests that our investment on education should be at least 6% of our GDP from 3% at present. This could be enhanced gradually to 6%. Implement the higher education Segment of the National Education Policy after taking States on board.

Government should consider having a digital Skilling for Children under a Central Government Scheme.

SKILL TRAINING

India must make a coordinated effort to reform and rebrand Vocational Skill training besides aligning education with

the job market, to leverage its demographic advantage to meet its USD 5 Trillion Economy target. Efforts are needed towards rebranding skill education so that Students do not run to conventional streams like arts, commerce or STEM (Science, technology, engineering, and mathematics). Market linked Skill development will help India reach its Job growth potential by changing its employment landscape.

INDO PACIFIC ECONOMIC FRAMEWORK (IPEF)

The IPEF consisting of 14 members including India has got four pillars viz. Pillar I - Trade, Pillar II - Supply Chain Resilience, Pillar III - Clean Economic Stability and Pillar IV - Fair Economy. Beyond these four pillars, there is an overarching administrative agreement to establish a high level political oversight framework at the ministerial level over the various four pillars while setting general guidance and goals and guiding leader's vision and mandate for IPEF. At present India has joined all the pillars except the one on Trade (Pillar I). The aim of IPEF is to strengthen economic engagement and cooperation among partner's countries to advance growth, economic stability and prosperity in the region.

The IPEF negotiations have been mostly been conducted in secrecy with limited public input and it raises concerns if the member countries including India, are able to protect their key interest specially relating to tax policy, export restrictions and other related issues. A roadmap could be announced to join (Pillar I) that is trade related issues along with consequential

impact. However, the President elect of US may not be interested in IPEF and hence we need to have a cautious approach.

LATERAL ENTRY

A lateral entry system is good for economy as it injects new energy, new ideas via people who come with a different mind-set and experience from professional civil servants. It will improve governance and policy making to facilitate so that India can perform better. To manage resistance against lateral entry there is need to create jobs in private sectors especially in manufacturing. Further, various assignments can be outsourced to consultants instead of through lateral entry.

EVALUATION OF CENTRALLY SPONSORED PROGRAMMES

The Centre currently runs around 37 centrally sponsored programmes, which are aimed at boosting economic and social sector outcomes in the areas such as guaranteed rural employment, rural roads, housing, irrigation, health and agriculture. To look into inefficient spending issue there is need for evaluation of schemes. Under various schemes the fund-sharing pattern between the Centre and States is 60:40; 50:50 and entirely funded by Centre. The evaluation should take into consideration the ratio of funding; the achievement of goals and leakages.

WELFARE SCHEMES

Freebies may be smart politics and certainly help parties get immediate gains,

but they exemplify bad economics. All political parties are competing with each other on freebies. Scarc fiscal resources are being diverted from investments that could be beneficial to the poor in the long, to boost short-term consumption, which does nothing to solve the larger systemic problem of inequality. The 15th Finance commission report has rightly sounded a note of caution on this issue. The only way to start a process of rectification is to take the route of an overhaul of India's fiscal federalism framework.

ELECTORAL BOND (EB) SCHEME

Donations were made to political parties through electoral bonds on the basis of laws enacted by Parliament. To bring transparency and check the generation of black money the EB's with required checks and balances should be brought again through Parliamentary legislation.

TAX DEVOLUTION

As GST is consumption-based tax, it favours consuming States and not producing States such as Gujarat, Karnataka, Maharashtra, Tamil Nadu & others. Further, the restriction on States by GST divisible pool of taxes to 41% and the amount the Centre can collect as cesses and surcharges which is beyond the ambit of devolution should be looked into by 16th Finance Commission to amend the tax devolution framework that will lead to greater autonomy to the States to have a truly federal and participatory government model. Any additional devolution should only be to the 3rd Tier and conditional on States implementing devolution of funds

and functionaries to local governments.

At present, there are five slabs under GST structure including exemption slab, need to have a uniform rate. Petrol and diesel should be brought under GST ambit under appropriate slab.

SOLAR PANELS

To incentivise domestic manufacturing of Solar panels and manage global competition we need to derisk the investment by inviting bids for a longer period say 10 years. Further land and other inputs namely power etc should be offered at economical cost. Levy safeguard duty and price support to give due protection to domestic suppliers as these measures are WTO compatible. The solar panels could be used under PM Roof Top Solar Scheme and KUSUM programs including in Govt funded buildings and campuses.

RETROSPECTIVE TAXATION

Retrospective taxation powers for mineral bearing States is against the cannon of certainty. Income tax is a key consideration in investment decisions. The retrospective taxation will hurt investor's confidence and won't have any positive impact on States economy. States must keep their competitive edge in mind before they decide to implement the Supreme Court decision.

INCOME TAX ACT REVIEW

Following the budget announcement in the July 2024, Central Board of Direct Taxes have set up an internal committee for a

comprehensive review of the six decade old direct tax law and to make it concise, lucid, easy to read & understand and mitigation of litigation. The exercise is not to write a new tax law or a Tax Code rather to remove the outdated clauses and make the law concise by having around 100 pages. The revised futuristic act should be at par with the income tax acts of developed countries and reduce transaction cost.

RAILWAY REFORMS

Reduce the dependence on gross budgetary support and/or borrowings from the Central government and also reduce the operating ratio from the present 98.26.

The freight segment is profitable whereas the passenger segment makes huge losses. Recent data shows that there was a loss of Rs 68269 crore in passenger services, with all the profit from freight tariff nullified in cross subsidizing. The annual growth in freight volume and revenue stands at 1% and 3% respectively while the economy grew at 7%. There is a need to rationalise the fare and freight structure.

Inadequacies in railway safety system should be addressed on priority basis. Importance has not been given to upgrading the signalling and telecommunications network as well as human resources development.

CONCLUSION

Indian economy has shown remarkable resilience in the face of global geopolitical challenges and is poised for steady growth. An above average monsoon in most parts of India will lead to strong agricultural growth, enhancing the rural economy through rural spending. It will complement the performance of industry and services sectors. Recently announced employment linked incentive scheme will increase labour demand and job creation. However, the government should continue with ease of doing business reforms.

Due to inward looking import tariff policy of US President elect Trump, we need to have a strategy to manage it and also assess the impact on trade links with China after resetting of economic ties subsequent to disengagement along border with China.



Think Tank on Agriculture and Animal Husbandry

स्कूल भारती ऑर्गेनाइजेशन (SBO)

28 दिसंबर 2024, सूर्या फाउंडेशन के केन्द्रीय कार्यालय B-3/330 पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063 में सूर्या फाउण्डेशन की शैक्षिक विंग SBO द्वारा NEP-2020 एवं बच्चों तथा देश के सर्वांगीण विकास पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया जो अत्यन्त उत्साहवर्धक और शिक्षाप्रद था। सेमिनार का प्रारंभ (10:45 AM) परंपरागत रूप में दीप प्रज्वलन, सरस्वती वन्दना एवं गायत्री महामंत्र से हुआ। विशेष बात यह रही कि सेमिनार के चारो अतिथि वक्ता अपने-अपने विषय के ज्ञाता और उसे जीवन में जीने वाले थे। आदर्श गाँव योजना के कार्यकर्ता श्री कृष्ण गोपाल ने 'सच्चा वीर बना दे माँ' गीत करवाया।

श्री प्रमोद आसरे ने सूर्या फाउण्डेशन का अति सुन्दर, संक्षिप्त, प्रामाणिक और मनमोहक परिचय दिया।

विजय जी ने PPT के माध्यम से SBO का विस्तृत परिचय आकर्षक शैली में फोटोज और वीडियो के साथ कराया जिसे सभी श्रोता बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

प्रो. एच एल शर्मा ने सूर्य भारती पुस्तकों की रचना, NEP-2020 एवं NCF-2023 के अनुरूप संशोधन, पुस्तकों की उपयोगिता एवं उनकी रचना में चार आधारभूत सिद्धांतों - मिनिमम लेवल ऑफ लर्निंग, मास्टरी लर्निंग, कान्सेप्ट मैपिंग एवं रचनावाद का संक्षिप्त वर्णन किया।

मुख्यवक्ता डॉ सतीश कुमार (प्रो. शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली) ने बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने के सूर्या फाउण्डेशन के प्रयासों की सराहना करते हुए अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। जैसे- पानी की बोतल के वजन को स्कूल द्वारा बच्चों के लिए

पानी का समुचित प्रबंध करके कम किया जा सकता है। उन्होंने शिक्षा द्वारा समाज में पंच परिवर्तन-

1. सामाजिक समरसता,
2. पर्यावरण,
3. परिवार प्रबोधन,
4. नागरिक कर्तव्य
5. स्वत्व जागरण

का अत्यंत सजीव चित्रण सरल भाषा में किया।

विशिष्ट वक्ता एवं पर्यावरण प्रेमी श्री राजीव बंसल (अखिल भारतीय पर्यावरण संरक्षक टोली के सदस्य एवं डायरेक्टर -Gozoom Technologies Pvt. Ltd.) ने पर्यावरण के व्यापक अर्थ को समझाते हुए बताया कि जमीन, जल, जंगल, जीव-जन्तु और जन इन पाँचों का सम्मिलित रूप ही पर्यावरण है। ये सभी एक दूसरे के पूरक, सहजीवी और सहयोगी हैं। इनमें से किसी का संकट भी हम सबका संकट है। प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए आपने बताया कि प्लास्टिक के उपयोग से हमारे देश में कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ बढ़ रही हैं, अतः हमें प्लास्टिक के उपयोग को नियंत्रित करना चाहिए।

विशिष्ट वक्ता आचार्य देवेन्द्र शास्त्री (उपदेशक आर्यसमाज जनकपुरी) ने माता को प्रथम गुरु बताया और कहा कि गुरु का अर्थ गौरव पूर्ण है। अतः भविष्य की माताएँ बनने वाली कन्याओं की शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है जिससे हमें श्रेष्ठ गुरु के रूप माताएँ प्राप्त होंगी जिनसे परिवार, समाज और राष्ट्र उत्तरोत्तर

उन्नति करेंगे। समस्त विश्व का भी कल्याण होगा। शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानंद के अंतरंग शिष्य स्वामी श्रद्धानंद के द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की चर्चा करते हुए आपने बताया कि मिशनरी स्कूल की अपने वैदिक धर्म के विरुद्ध शिक्षा के कारण स्वामी श्रद्धानंद ने पहले अपने घर में ही बच्चों को पढ़ाना और भारतीय वैदिक संस्कार देना शुरू किया, बाद में अपनी सारी जमीन गुरुकुल के लिए दान कर विश्वविद्यालय शुरू किया था जिसमें आजकल विदेशों से भी छात्र अध्ययन करने आते हैं। मुख्य अतिथि श्री पंकज गोयल (राष्ट्रीय महामंत्री) भारत तिब्बत सहयोग मंच एवं संयोजक, तवांग तीर्थ यात्रा समिति) ने बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने की दिशा में सूर्या फाउण्डेशन के प्रयासों की सराहना की और बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने के लिए अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए जैसे सेमेस्टर संख्या बढ़ाकर और विषयों की संख्या को सीमित कर बस्ते का बोझ कम किया जा सकता है। हमें राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए बच्चों को अपने देश के सबसे बड़े शत्रु चीन को पहचानना जरूरी है।

श्री गुरुजी ने कहा था, चीन एक धूर्त विस्तारवादी देश है जिसका विश्वास नहीं किया जा सकता, किन्तु फिर भी नेहरूजी ने चीन से पंचशील संधि की और अपनी सैन्य शक्ति को कम किया जिससे 1962 में चीन ने अपने देश पर हमला किया और हमारी हजारों वर्ग किलो मीटर भूमि हथिया ली। भगवान शिव का निवास कैलाश मानसरोवर भी तब से चीन के अधिकार में है। चीन हमारा सबसे बड़ा शत्रु है जो 1962 से अब तक लगभग 1547 बार हमारी भूमि पर अतिक्रमण (Encroachment) कर चुका है जिसका प्रत्युत्तर पूर्ववर्ती सरकारें नहीं दे पाई, पर सौभाग्य की बात है कि चीन की ऐसी हरकतों का जवाब वर्तमान सरकार दे पा रही है। किन्तु हम सबको भी चीनी सामान का बहिष्कार करके चीन की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचाना चाहिए। अंत में उन्होंने सभी से बच्चों को चीन को अपना सबसे शत्रु बताने और उसके द्वारा बने सामान का उपयोग न करने की अपील करते हुए अपने वक्तव्य को पूर्ण किया।



पीएम श्री सूर्या एकलव्य सैनिक स्कूल, खेरांचा



TEACHER TRAINING

शिक्षक आजीवन विद्यार्थी है, यह बात सार्थक हुई जब हमारे विद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 10 सितंबर 2024 के दिन बी.एड. कॉलेज, मोडासा के प्रधानाचार्य डॉ. बी. डी. पटेल सर के द्वारा 'कक्षा शिक्षण की चुनौतियाँ' विषय पर मार्गदर्शन रहा। इस कार्यक्रम में सभी शिक्षकगण, प्रिंसिपल सर एवं मैनेजर सर उपस्थित रहे थे।

समाज का आधार है शिक्षा और शिक्षा का आधार है शिक्षक। शिक्षकों को अपने जीवनकाल में निरंतर सीखने और विकसित होने की आवश्यकता रहती है। इसकी पूर्णता हेतु सूर्या फाउण्डेशन द्वारा हर साल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। यह शिविर दिनांक 6 नवंबर से 8 नवंबर 2024 तक कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर (म.प्र.) में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में R.I.E., भोपाल के प्राध्यापकों से विषयानुरूप मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।



खेल

- खेलो इंडिया (स्कूल गेम्स) के अंतर्गत आयोजित कराटे की प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय के कैडेट सिधार्थ गणवा ने स्वर्ण, कटारा द्रुमिन अर्जुनभाई एवं बामनिया विष्णु नरेशभाई ने रजत, बरंडा ध्वनित सतीशभाई, कटारा प्रित राजेशभाई, राज शैलेशभाई हटीला, कटारा विक्रांत दिलीपभाई और मोरी गोविन्द भाई ने कास्य जिला स्तर की कराटे प्रतियोगिता में पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया।
- हमारे कैडेट्स ने अंडर 14, 17 और 19 विभाग में दिनांक 24 अक्टूबर से 10 नवंबर 2024 तक गुजरात के विभिन्न स्थानों पर राज्य स्तर (स्कूल गेम्स) की खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जिसमें बास्केटबॉल, तीरंदाजी, स्विमिंग, एथलेटिक्स, हैंडबॉल और फुटबॉल शामिल थे। कैडेट उमेश राठवा ने एथलेटिक्स (300 मीटर) में राज्य में चौथा स्थान प्राप्त किया। कैडेट विनोद संगड़ा ने एथलेटिक्स (400 मीटर) में 5वाँ स्थान प्राप्त किया। कैडेट दीश मालीवाड़ ने एथलेटिक्स (ट्रिपल जम्प) में राज्य में 5वाँ स्थान प्राप्त किया।
- स्कूल में दिनांक 23 नवंबर, 2024 को कक्षा 6 से 12 के कैडेट्स के लिए हाउस-वाइज क्रॉस-कंट्री दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



CO-CURRICULAR ACTIVITIES

- दिनांक 5 सितंबर 2024 को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में 'शिक्षक दिवस' कार्यक्रम मनाया गया। इस कार्यक्रम में कुछ विद्यार्थियों का एक दिन के शिक्षक के रूप में चयन किया गया। शिक्षक बने विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक पढ़ाने का कार्य किया। इन विद्यार्थियों का मूल्यांकन हुआ और उन्हें पुरस्कृत कर प्रोत्साहित भी किया गया।
- गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर प्रार्थना कक्ष में भगवान गणेशजी की मूर्ति को स्थापित किया गया। परंपराओं के अनुसार सभी विद्यार्थी, स्टाफ, प्रिंसिपल सर और मैनेजर सर की उपस्थिति में सुबह-शाम भगवान गणेशजी की धून, भजन, मंत्र, होम-हवन और आरती के साथ पूजा-अर्चना की गई। पाँचवें दिन भगवान गणेशजी की प्रतिमा का विसर्जन मेश्वो जलाशय, शामलाजी में हर्षोल्लास के साथ किया गया।



- दिनांक 13 सितंबर 2024 को हमारे कैडेट्स ने खोडंबा गाँव में तालुका स्तरीय और जिला स्तरीय 'गणित और विज्ञान प्रतियोगिता' (विज्ञान मेला) में भाग लिया।
- दिनांक 14 सितंबर 2024 को 'हिंदी दिवस' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। हिन्दी दिवस के महत्व पर वक्तव्य, समूहगीत, अभिनय गीत आदि कार्यक्रम हुए।



- दिनांक 29 सितंबर 2024 को अहमदाबाद में भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय समूह गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसमें हमारे स्कूल ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।
- हमारे स्कूल के कैडेट्स ने मोडासा में आयोजित 'गणित और विज्ञान प्रतियोगिता' (विज्ञान मेला) में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- दिनांक 3 अक्टूबर, 2024 को कैडेट्स ने 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के उपलक्ष्य में मोडासा में स्कूल बैंड प्रतियोगिता में भाग लेकर शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने जोन 1 में प्रथम स्थान प्राप्त करके उत्कृष्टता की परंपरा को बनाए रखा।

- विद्यालय में नवरात्रि महोत्सव का आयोजन किया गया। अशोक हॉस्टल के मुख्य द्वार पर देवी दुर्गा माता प्रतिमा की स्थापना की गयी। नवरात्रि दौरान विद्यार्थी, स्टाफ, प्रिंसिपल सर और मैनेजर सर की उपस्थिति में सुबह-शाम माता दुर्गा की धून, भजन, मंत्र, होम-हवन और आरती के साथ पूजा-अर्चना की गई।
- विजयादशमी के दिन शस्त्र पूजन, रावण-दहन कार्यक्रम और आनंद मेला का आयोजन किया गया। शाम को रामधून और नारों के साथ-साथ रावण-दहन का कार्यक्रम किया। इसके बाद आनंद मेला के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों का लाभ कैम्पस में रहनेवाले सभी ने आनंदपूर्वक प्राप्त किया और कैडेट्स का उत्साहपूर्वक नाचगान हुआ।
- दिनांक 18 नवंबर, 2024 को 6 से 8 और दि. 29 नवंबर, 2024 को कक्षा 9 से 12 के लिए Parent Teacher Meeting का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में विविध विषयों पर मार्गदर्शन हुआ। विद्यार्थियों की प्रथम सत्रांत परीक्षा के परिणाम वितरण किए गए और कैडेट्स की प्रगति एवं विकास पर चर्चा हुई।

स्वास्थ्य

- दिनांक 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक स्वच्छता अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत अपने स्कूल की सफाई, गौशाला की सफाई, गाँव



के सार्वजनिक स्थलों की सफाई, निबंध स्पर्धा, शेरी नाटक, पक्षी सुरक्षा, समूहगीत, प्रभात फेरी जैसी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य स्वच्छता और स्वास्थ्य को बढ़ावा देना था।

- स्कूल में मेडिकल टीम द्वारा वार्षिक चिकित्सा जांच का आयोजन किया गया। जिससे सभी छात्रों और स्टाफ के स्वास्थ्य की जांच और उपचार हो सके।

गणमान्य व्यक्तियों का आगमन

- दिनांक 10 अक्टूबर, 2024 को 'प्रतिष्ठित विकास पथ टॉक' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत माननीय श्री संजय केशवाला (IPS) के विषय अनुरूप वक्तव्य द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में मैनेजर सर, प्रिंसिपल



सर, शिक्षक और कैडेट्स उपस्थित रहे थे। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम ने हमारी प्रगति की भावना को विकसित किया।

- दिनांक 12 अक्टूबर, 2024 को रोटरी क्लब मोडासा के सहयोग से 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस' स्कूल में मनाया गया। इस कार्यक्रम में माननीय अतिथि डॉ. एम. के. पटेल, श्री कमलेश पटेल, डॉ. बिंटल पटेल, श्री हितेंद्र पंचाल, श्री मुकेश परमार का विषयानुरूप वक्तव्यों में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मैनेजर सर, प्रिंसिपल सर, शिक्षक और कैडेट्स इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे थे। 'स्वस्थ मानसिकता का पढ़ाई में महत्व' विषय विद्यार्थियों को बहुत लाभदायक रहेगा।

यात्रा

- दिनांक 9 दिसंबर, 2024 को कक्षा 6 के कैडेट्स का एक दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया। कैडेट्स ने मेश्वो डैम, श्यामल वन और शामलाजी मंदिर के दर्शन किए।



कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर, सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित विद्यालय में गणेश उत्सव का त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया गया। गणेश चतुर्थी के दिन हमारे विद्यालय में गणेश जी की प्रतिमा स्कूल बैण्ड-बाजे के साथ लाई गई और विद्यालय में हवन-पूजन के साथ गणेश जी की पार्थिव मूर्ति को स्थापित किया गया। विद्यालय की सभी छात्राओं और सदस्यों द्वारा गणेश पूजन एवं हवन एवं आरती की गई। इस तरह से 10 दिनों तक भगवान गणेश की प्रतिमा की पूजा-अर्चना की गई।

विद्यालय में सेवा पखवाड़ा 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक मनाया गया। पखवाड़े के अंतर्गत अनेक गतिविधियाँ की गईं। जैसे-सिवान नदी की साफ-सफाई एवं पक्षियों के घोंसलें बनाना, गौशाला की सफाई एवं वृद्धाश्रम में जाकर सभी नागरिकों की सेवा, गणेश मंदिर, विद्यालय की साफ-सफाई एवं रंगोली प्रतियोगिता तथा निबंध प्रतियोगिता भी की गईं। इस दौरान सफाई से जुड़ी गतिविधियाँ चलाई गईं जिससे बालिकाओं में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़े।





विद्यालय द्वारा कक्षा 6वीं की छात्राओं को दिनांक 28 सितम्बर 2024 को भोपाल, भोजपुर का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया, जिसमें भोजपुर शिव मंदिर, आंचलिक विज्ञान केंद्र भोपाल, रानी कमलापति रेलवे स्टेशन, शौर्य स्मारक शामिल रहा।

कन्या शिक्षा परिसर सीहोर में विजयदशमी मनाई गई। इसी दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था तथा देवी दुर्गा ने नौ रात्रि और दस दिन के युद्ध के उपरांत महीसासुर पर विजय प्राप्त की थी। इस अवसर पर परंपरागत रूप से रावण दहन एवं आनन्द मेले का आयोजन किया गया।

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर में सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित विद्यालय में शिक्षकों के कौशल को निखारने के लिए **Capacity Building Programme (CBP)** का आयोजन किया गया जिसमें NCERT के शिक्षाविद् एवं सूर्या रोशनी लिमिटेड काशीपुर प्लांट हेड श्री शुभम् चमोली जी का मार्गदर्शन हुआ। जिसमें कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर और पीएम श्री सूर्या एकलव्य सैनिक स्कूल के सभी शिक्षक इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में रहे, प्रशिक्षण विशेष रूप से शिक्षकों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए तैयार किया गया।

विद्यालय में छात्राओं के क्षितिज को व्यापक बनाने तथा बाहरी दुनिया से परिचित कराने के उद्देश्य से कक्षा 11वीं की बालिकाओं का दिनांक 24 से 26 दिसंबर 2024 ग्वालियर, ओरछा, झाँसी भ्रमण आयोजित किया गया। भ्रमण के दौरान छात्राओं को सूर्या मंदिर, शनिचरा मंदिर, ग्वालियर किला, लक्ष्मीबाई फिजिकल एजुकेशन कालेज, NCC OTA, राजा राम मंदिर ओरछा, झाँसी किला, सैनिक स्कूल झाँसी, औद्योगिक इकाइयाँ जैसे सूर्या रोशनी लिमिटेड (पाइप एवं लाइटिंग फैक्ट्री) इत्यादी दिखाई गई।







वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सत्येंद्र सिंह जी सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित वनवासी बालिकाओं के विद्यालय वार्षिकोत्सव में पधारे

कन्या शिक्षा परिसर सीहोर, विद्यालय में दिनांक 1 दिसंबर 2024 को हर्षोल्लास के साथ द्वितीय वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सत्येंद्र सिंह जी एवं विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर जयदीप मंडल, प्राचार्य-क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, NCERT भोपाल उपस्थित रहे। अन्य अतिथियों में जनजातीय कार्य विभाग, सीहोर के जिला संयोजक श्री हीरेन्द्र कुशवाहा जी, सीहोर के माननीय नगर संचालक श्री भारत सोनी जी, NCC भोपाल से सूबेदार मेजर एम. के. शर्मा, सिविल अस्पताल, सीहोर से डॉ. गौरव ताम्रकर एवं डॉ. आर. के. सिंघल आदि महानुभाव उपस्थित रहे। एक हजार से अधिक की संख्या में अभिभावक कार्यक्रम देखने आए।

इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती प्रमिला राही पाण्डेय ने विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया गतवर्ष विद्यालय की बोर्ड कक्षाओं का परिणाम लगभग शत-प्रतिशत रहा तथा विगत वर्षों में विद्यालय की चार छात्राओं ने राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। प्रतिवर्ष सभी कक्षा के विद्यार्थियों को अलग-अलग भारत यात्राओं पर ले जाया जाता है। विद्यालय में घोष

तथा पाइप बैंड का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। NCC की जूनियर विंग की भी शुरुआत हुई है। विद्यालय कौशल विकास प्रशिक्षण पर जोर देते हुए हॉबी क्लब के माध्यम से सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, हस्तशिल्प, ब्यूटीशियन, पाककला, ग्राफिक डिजाइनिंग, कोडिंग, नृत्य और संगीत का स्व-रोजगार का प्रशिक्षण दे रहा है। सूर्या फाउण्डेशन द्वारा विद्यालय में एक गौशाला का निर्माण भी किया गया है जिससे गौ-माता का पौष्टिक और ताजा दूध बालिकाओं को दिया जाएगा। तत्पश्चात बालिकाओं द्वारा शारीरिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन हुआ जिसमें समूहगान, कराटे, लोक नृत्य, घोष, योग गोपुरम प्रदर्शन, तीरंदाजी तथा व्यायाम योग ने दर्शकों का मन मोह लिया। छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। बालिकाओं तथा अभिभावक द्वारा अपने अनुभव कथनों में व्यक्त भावों ने सभी को भावुक कर दिया। समारोह में पुरस्कार वितरण आयोजित किया गया जिसमें वर्षभर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्राओं, शिक्षकों और प्रबंधकों को सम्मानित किया गया। विद्यालय में सतत सहयोग तथा सक्रिय भागीदारी को देखते हुए अभिभावक श्री रामदीन बारेला, ग्राम-बावड़ीखेडा को भी विद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया।

वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष श्री सत्येंद्र सिंह जी ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए छात्राओं एवं विद्यालय की सराहना की। उन्होंने कहा कि जैसे ही परिसर में प्रवेश किया तो उन्हें गुरुकुल परम्परा की याद आ गई। इस देश की संस्कृति अरण्य संस्कृति है और अरण्य संस्कृति के देवता भगवान शिव हैं। भगवान शिव की संस्कृति जनजाति की संस्कृति है और जनजाति संस्कृति ही सनातन हिंदू संस्कृति है और इसी संस्कृति से विश्व में अन्यान्य संस्कृतियाँ विकसित हुई हैं। जनजातीय समाज इस सनातन परम्परा की मुख्यधारा का जनक है, संवाहक है, संरक्षक है। जनजातीय समाज इस देश का प्राण है। इसलिए सूर्या फाउण्डेशन यह श्रेष्ठ कार्य निरंतर करता रहे।

अपने वक्तव्य में उन्होंने भारत माता के लिए समर्पित महापुरुषों के प्रेरक चरित्रों का स्मरण कराते हुए पाँच बातों का विशेष रूप से आवाहन किया।

पहला-समाज में समरसता। हम सब का खून एक ही है हमारे पूर्वज एक ही हैं। किसी कारण से कोई नगर में है कोई वन में है कोई ग्राम में है लेकिन हम सब एक हैं, इस नाते हम सब में समरसता रहनी चाहिए छुआछूत, ऊँच-नीच व भेदभाव समाप्त होने चाहिए।

दूसरा-पर्यावरण। हमें पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली को अपनाना है। वृक्षारोपण पर जोर देते हुए

उन्होंने कहा कि वृक्ष सिर्फ एक वृक्ष नहीं है एक जीवन है और वृक्ष बचेंगे तो ही हमारा जीवन बचेगा।

तीसरा-पारिवारिक मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु कुटुंब प्रबोधन। समाज में बढ़ते एकल परिवार के चलन को रोक कर भारत की प्राचीन संयुक्त व संस्कारयुक्त परिवार परंपरा को बढ़ावा देने की आज महती आवश्यकता है।

चौथा-नागरिक कर्तव्य। सभी जगह नियम बने हुए हैं। परिवार, क्लब, देश का नियम होता है, इस कन्या शिक्षा परिसर का भी नियम है उस नियम का पालन करना ही नागरिक कर्तव्य है। नागरिक कर्तव्य बोध अर्थात कानून की पालना से राष्ट्र समृद्ध व उन्नत होगा।

पांचवा 'स्व' का बोध अर्थात स्वदेशी। जनजातीय भाषाओं को याद रखना है भाषा हमारी धरोहर है। हमारी संस्कृति में लोक नृत्य है, गीत है संगीत है उसको भी नहीं भूलना है क्योंकि जनजातीय समाज में नृत्य भगवान की पूजा है और विभिन्न प्रकार की कलाएँ भगवान की आराधना है। अपने संबोधन में उन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन की प्रेरणादायी घटनाओं को बताते हुए सभी को प्रेरित किया तथा विद्यार्थियों को नए सपने देखने और उन्हें साकार करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्रबंधक श्री सत्येंद्र शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस भव्य आयोजन का समापन हुआ।







SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar New Delhi-110063

Phone: 011-2525 3681 | Email: info@suryafoundation.org | www.suryafoundation.org

